Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 41 अंक-10
कल्पादि सम्वत् 1972949117

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 31 मई से 06 जून 2017 तक
ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी से ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी सम्वत् 2074 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

देश का पता नहीं... पृष्ठ- 3

अमरूद के सेवन.... पृष्ठ- 4

निर्जला एकादशी... पृष्ठ- 5

मुस्लिम शरीयत में... पृष्ठ- 8

गिरने में भी अव्वल... पृष्ठ- 12

- साइबर सुरक्षा पर कितना तैयार है सरकार
- धर्मान्तरण को अपना अधिकार समझती हैं ईसाई मिशनरियाँ
- आध्यात्मिक आंदोलन ही पूर्ण आजादी लाएगा
- समान नागरिक संहिता क्यों आवश्यक है...?
- अरविन्द केजरीवाल जैसा मुख्यमंत्री पालना कितना मुश्किल है

पिछले एक साल में २६८ बार संघर्ष विराम का उल्लंघन कर चुका है पाकिस्तान

गुलाम कश्मीर को भारत में शीघ्र सम्मिलित किया जाये–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

पाकिस्तानी सैनिकों ने राजौरी जिले में नियंत्रण रेखा के पास के इलाकों में गोलाबारी की जिससे १० हजार लोग प्रभावित हुए हैं और सीमावर्ती इलाकों में रहने वाले ११०० लोगों को वहां से निकाला गया। पाकिस्तानी सेना ने कल नौशेरा इलाके में स्थित नियंत्रण रेखा के पास अग्रिम चौकियों पर और असैन्य इलाकों में मोर्टार दागे थे। हमले में दो नागरिक मारे गए थे और तीन लोग घायल हो गए थे। केंद्रीय मंत्री जितेन्द्र सिंह ने कहा कि शेष पृष्ठ 11 पर

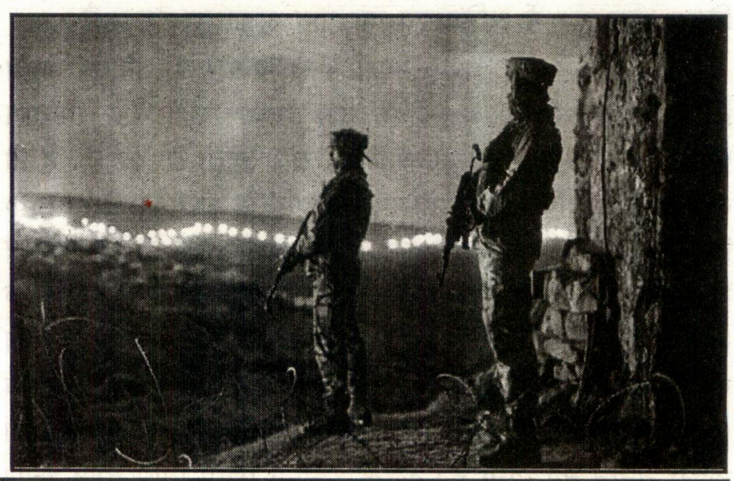

सुरक्षाबलों ने लिया सुकमा का बदला, जलेबी चक्रव्यूह में घेरकर १५ नक्सलियों को किया ढेर, नक्सलवाद का हो शीघ्र सफाया-हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

छत्तीसगढ़ में सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में १५ नक्सलियों को मार गिराने का दावा किया है, हालांकि इस दौरान किसी भी नक्सली का शव बरामद नहीं हुआ है। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के विशेष महानिदेशक केंद्रीय अंचल कुलदीप सिंह ने बताया कि बुरकापाल हमले के बाद नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में नक्सलियों के खिलाफ लगातार कार्रवाई की जा रही है। इस महीने की १२ से १६ तारीख के बीच नक्सलियों के खिलाफ एक बड़ा अभियान चलाया गया जिसमें सीआरपीएफ, जिला बल, डीआरजी और एसटीएफ के जवान शामिल थे।

अभियान के दौरान सुरक्षाबलों के जवानों ने १५ नक्सलियों को मार गिराया है। सिंह ने बताया कि पुलिस दल ने इस दौरान किसी भी नक्सली का शव और हथियार बरामद नहीं किया है। हालांकि अभियान में शामिल सुरक्षाबलों के जवानों और ग्रामीणों ने क्षेत्र में कम से कम १५ नक्सलियों के मारे जाने की जानकारी दी है। नक्सलियों के खिलाफ सुरक्षाबलों की यह कार्रवाई ६६ घंटे तक चली। पहली बार नक्सलियों से मुठभेड़ के दौरान सुरक्षाबलों को भारतीय वायु सेना की मदद मिली। पूरे अभियान के दौरान भारतीय वायु सेना के विमानों सुरक्षाबल के जवानों को खाने–पीने की सामग्री पहुंचाई। पुलिस अधिकारी के मुताबिक माओवादियों के खिलाफ ३ दिनों तक ऑपरेशन चलाया गया। १००–१५० की संख्या में नक्सलियों को घेरा गया था। खासबात ये थी कि पहली दफा माओवादी कोबरा जवानों की वर्दी में देखे गए, इस ऑपरेशन में सीआरपीएफ, डीआरजी, जिला बल और कोबरा के जवान शामिल थे। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के आईजी देवेन्द्र चौहान ने बताया कि इस सघन अभियान में तकरीबन ३५० सुरक्षाकर्मी शामिल थे। उन्होंने बताया कि अमूमन माओवादी काली ड्रेस पहनते हैं लेकिन पहली बार देखा गया वे कोबरा की यूनिफॉर्म में थे। हमले में भदोही के शरद उपाध्याय शहीद हुए, पुलिस और डीआरजी के दो जवान घायल हुए। छत्तीसगढ़ के नक्सल शेष पृष्ठ 11 पर

चरण स्पर्श है पुण्यवर्धक

नागेश्वर नाथ माथुर

हमारे भारतीय समाज में परिवार के बड़े–बुजुर्गों तथा संत महात्माओं का चरण स्पर्श करने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। इस परम्परा के पीछे अनेक कारण मौजूद हैं। शास्त्रों के अनुसार ऐसी मान्यता है कि वरिष्ठ वयोवृद्धजन के चरण स्पर्श से हमारे पुण्य में वृद्धि होती है। उनके शुभाशीर्वाद से हमारा दुर्भाग्य दूर हो जाता है तथा मन को शान्ति मिलती है। बड़ों का चरण स्पर्श तथा प्रणाम एक परम्परा या विधान ही नहीं है अपितु यह एक विज्ञान है जो हमारे मनोदैहिक तथा वैचारिक विकास से जुड़ा है। इससे हमारे मन में अच्छे संस्कारों का उदय होता है तथा नई और पुरानी पीढ़ी के बीच स्वस्थ सकारात्मक संवाद की स्थापना होती है। चरण स्पर्श प्रणाम–निवेदन करना अभिवादन करना भारतीय सनातन शिष्टाचार का महत्त्वपूर्ण अंग है, यह एक जीवन संस्कार है। प्रणाम–निवेदन में नम्रता, विनयशील सेवा, श्रद्धा सेवा, आदर एवं पूज्यता का भाव संन्निहित रहता है। अभिवादन से आयु, विद्या, यश एवं बल की वृद्धि होती है। भारतीय परम्परा में प्रातः जागरण से शयन पर्यन्त प्रणाम की अविच्छिन्न परम्पररा प्रवाहमान रहती है। प्रातः कर–दर्शन, भूमिवन्दन से लेकर शयन से पूर्व ईश विनय तक सब में अभिवादन का भाव अनुस्यूत रहता है।

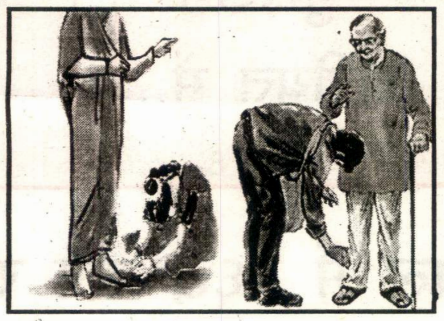

बड़े बुजुर्गों का चरण स्पर्श तीन प्रकार से किया जाता है–(१) झुककर (२) घुटनों के बल बैठकर तथा (३) साष्टांग प्रणाम कर। इन से जो आध्यात्मिक लाभ होता है, यह तो है ही स्वास्थ्य की दृष्टि से भी प्रणाम की प्रक्रिया अत्यन्त लाभदायक है। पहली विधि यानि झुककर चरण स्पर्श करने से कमर और रीढ़ की हड्डी को आराम मिलता है। दूसरी विधि में शरीर के सारे जोड़ों को मोड़ा जाता है जिससे उनमें होने वाले दर्द से राहत मिलती है। तीसरी विधि से चरण स्पर्श करने यानी साष्टांग प्रणाम करने से शरीर के सारे जोड़ देर के लिए तन जाते हैं तथा इससे तनाव दूर होता है। इसके अलावा प्रथम विधि द्वारा चरण स्पर्श में झुकना पड़ता है तथा झुकने से सिर में रक्त प्रवाह बढ़ जाता है, जो स्वास्थ्य खासतौर से नेत्रों के लिए लाभकारी होता है। द्वितीय तथा तृतीय विधि से चरण स्पर्श करने से स्वास्थ्य लाभ होता है और यह अनेकों रोगों को दूर करने में सहायक है। चरण स्पर्श से मन का अहंकार समाप्त होता है तथा हृदय में समर्पण और विनम्रता का भाव जाग्रत होता है, इसलिए भारतीय संस्कृति में बड़ों के सादर चरण स्पर्श की पुरातन परम्परा है। अभिवादन की श्रेष्ठतम् साष्टांग प्रणाम है। पेट के बल भूमि पर दोनों हाथ आगे फैलाकर लेट जाना साष्टांग प्रणाम है। इसमें मस्तक भ्रूमध्य नासिका वक्ष उरू घुटने करतल तथा पैरों की अंगुलियों का ऊपरी भाग–ये आठ अंग भूमि से स्पर्श करते हैं और फिर दोनों हाथों से सामान्य पुरुष का चरण स्पर्श किया जाता है।

एक हाथ से प्रणाम आदि करने का शास्त्र में निषेध है। वास्तव में प्रणाम देह को नहीं अपितु देह में स्थित सर्वान्तर्यामी पुरुष को किया जाता है। प्रणाम करने के लाभों की कृपा न होती तो मार्कण्डेय जी जिनकी आयु छः वर्ष में ही पूरी होने वाली थी। मृत्यु निश्चित थी किन्तु पिता द्वारा अभिवादन के व्रत में उपदिष्ट कर दिये जाने पर वे कल्प कल्प जीवी हो गये।

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह आसान काम भी चुनौती के रूप में नजर आयेंगे। गुप्त रहस्य उजागर हो सकते अतः सावधानी बरतने की आवश्यकता है। मानसिक उर्जा को बढ़ाने के लिए आप प्रयासरत रहेंगे। वाणी का प्रभाव बढ़ेगा और लोग आपकी बात सुनने को तैयार रहेंगे।

वृष : इस सप्ताह प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी जिससे मन में कई तरह के नकारात्मक विचार हावी होंगे। विरोधाभास की स्थितियों से निकलना जरूरी है क्योंकि ये आपके तनाव को और बढ़ायेंगी। आर्थिक स्थितियों को सुधारने के लिए किये गये कामों में सफलता प्राप्त होगी ।

मिथुन : इस सप्ताह कुछ लोगों को काम के प्रति निराशा हावी रहेगी जिससे अध्यात्म की ओर रूझान बढ़ेगा। गलत निर्णय लेने से बचें वरना किये कराये पर पानी फिर जायेगा। आश्चर्यजनक तथ्य सामने आयेंगे जिनसे आपको दो–चार होना पड़ेगा।

कर्क : इस सप्ताह यदि आप किसी से अपनी बात कहना चाहते है, तो सफल होंगे। सहयोगी आपका पूरा सहयोग करने के लिए तत्पर है। लेकिन आपको साहस पूर्वक कार्य करने की आवश्यकता नजर आ रही है।

सिंह : इस सप्ताह कुछ लोगों को अपने कार्य में शीघ्र निर्णय लेना पड़ सकता है। परिवार में वाद–विवाद न करें अन्यथा अपमान का घूंट पीना पड़ सकता है। मजबूरन रूढ़िवादी तरीको को अपनाना पड़ेगा जिससे मन में क्रोध उत्पन्न होगा।

कन्या : इस सप्ताह आपके द्वारा कुछ ऐसे कार्य होंगे जिससे परिवार में खुशी की लहर रहेगी। किसी मांगलिक उत्सव में भाग लेंगे जिससे मन को शुकून मिलेगा। आय व व्यय में समानता की स्थिति बनी रहेगी। विरोधियों को परास्त करने में सफल होंगे।

तुला : इस सप्ताह कुछ लोगों की स्थितियों में अचानक परिवर्तन आने की सम्भावना है। उर्जा का संचार बनायें रखें जिससे अपने कार्यो को सही वक्त पर पूर्ण कर सकें। लोगों पर अपनी छाप छोड़ने का प्रयास करें। निजी कार्यों की वजह से यात्र करनी पड़ सकती है।

वृश्चिक : इस सप्ताह कुछ लोगों पर अतीत की यादें हावी रहेगी जिससे किसी कार्य को करने में मन नहीं लगेगा। जो लोग कार्य की तलाश में भटक रहें है, उनको अवसर प्राप्त होंगे। निज स्वार्थ के कारण नियमों की अनदेखी न करें अन्यथा मुसीबत में फॅस सकते है।

धनु : इस सप्ताह आप सावधान रहें वरना विरोधी व्यक्ति आपकी हानि करा सकते है। विरोधियों के तमाम प्रपंचों के बावजूद आप विजयी होंगे। रोजगार व कैरियर में स्थितिय आपके अनुकूल बनी रहेंगी। आर्थिक मामलों में सामान्य स्थिति बनी रहेगी।

मकर : इस सप्ताह कुछ लोग भागदौड़ में पड़े रहेंगे और जिसके कारण कुछ जरूरी कार्य अधूरे रह जाने की पूरी सम्भवना है। काम की अधिकता रहेगी अतः आप–अपनी क्षमतायें बढ़ाने की कोशिश करें। योजनाओं का फल आपके अनुरूप न आने से मन थोड़ा सा दुःखी हो सकता है।

कुम्भ : इस सप्ताह कुछ लोगों को मिल रहा सहयोग समाप्त होने की कगार पर दिख रहा है। मित्रें से मनमुटाव की स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती है। कठिन परिस्थितियाँ सामने आ सकती है जिनसे मुंह न मोड़े बल्कि उनका डटकर मुकाबला करें। मार्गदर्शन करने वाले लोग आप से दूर हो सकते है।

मीन : इस सप्ताह अनिर्णय की स्थिति आपके मन पर हावी रहेगी जिससे आप–अपने को हताश महसूस करेंगे। पुराने नाराज लोग आपके निकट आने की कोशिश करेंगे। यदि आप दूरदर्शिता अपनायेंगे तो सफलता की शतप्रतिशत सम्भावना नजर आ रही है।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्‌भगवत गीता

अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन।
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्त्रमेकांशेन स्थितो जगत्।।

अथवा हे अर्जुन! इस बहुत जानने से तेरा क्या प्रयोजन है। मैं इस सम्पूर्ण जगत् को अपनी योगशक्ति के एक अंशमात्र से धारण करके स्थित हूँ।।४२।।

नाम दशमोऽध्यायः।।१०।।

अथैकादशोऽध्यायः

मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसञ्ज्ञितम्।
यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम।।

अर्जुन बोले–मुझ पर अनुग्रह करने के लिये आपने जो परम गोपनीय अध्यात्मविषयक वचन अर्थात् उपदेश कहा, उससे मेरा यह अज्ञान नष्ट हो गया है।।१।।

भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतो विस्तरशो मया।
त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम्।।

क्योंकि हे कमलनेत्र! मैंने आपसे भूतों की उत्पत्ति और प्रलय विस्तारपूर्वक सुने हैं तथा आपकी अविनाशी महिमा भी सुनी है।।२।।

एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर।
द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम।।

हे परमेश्वर! आप अपने को जैसा कहते हैं, यह ठीक ऐसा ही है, परन्तु हे पुरुषोत्तम! आपके ज्ञान, ऐश्वर्य, शक्ति, बल, वीर्य और तेज से युक्त ऐश्वर्य–रूप को मैं प्रत्यक्ष देखना चाहता हूँ।।३।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 31 मई से 06 जून 2017 तक

अध्यक्षीय

साइबर सुरक्षा पर कितना तैयार है सरकार

साइबर डकैती और फिरौती मांगने का यह सिलसिला गुरुवार–शुक्रवार को दुनिया के सौ से अधिक देशों में चला। जिसमें कई कंपनियों के कम्प्यूटर्स हैक हुए और उन पर ऊपर लिखी पंक्तियां स्क्रीन पर उभरीं। साइबर अपराध का यह नया मामला अभी बहुत से लोगों को समझ नहीं आ रहा है, लेकिन साफ्टवेयर बनाने वाली दिग्गज कंपनी माइक्रोसाट इसे बेहद गंभीर मान रही है और उसने दुनिया भर की सरकारों को आगाह किया है कि वे सावधान रहें। आज के विश्व में कम्प्यूटर का क्या महत्व है, इसे अलग से लिखने–बताने की जरूरत नहीं है। दैनिक कार्यो के लिए कम्प्यूटर पर हमारी निर्भरता खूब बढ़ गई है, कई बार तो ऐसा लगता है कि बिना कम्प्यूटर के काम होगा ही नहीं। और तब ऐसे अपराधों का होना यह खौफ पैदा करता है कि किसी दिन कम्प्यूटर ठप्प हो गए तो क्या होगा। अब तक कम्प्यूटर की सामान्य जानकारी रखने वाले यह जानते हैं कि कम्प्यूटर सिस्टम हैक किया जा सकता है, जिससे बचने के लिए पासवर्ड जैसी सुरक्षा व्यवस्था की जाती है। कम्प्यूटर में एंटीवायरस डालकर अवांछित गड़बड़ी रोकने का उपाय भी हमें मालूम है। लेकिन साइबर फिरौती बहुत से लोगों के लिए चौंकाने वाला, डराने वाला अपराध है। पिछले गुरुवार–शुक्रवार दुनिया के कई देशों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कम्प्यूटर इस अपराध का शिकार बने। वनाक्राइ रैंसमवेयर इन्फेक्शन के जरिए उनके कम्प्यूटरों को बेकार कर दिया गया। रैन्समवेयर एक ऐसा साफ्टवेयर है जिससे एक कम्प्यूटर में वायरस आ जाता है और यूजर तब तक इसे खोल नहीं पाता जब तक कि वह इसे अनलॉक करने के लिए रैन्सम फिरौती नहीं देता। अमेरिका कम्प्यूटर इमरजेंसी रेडीनेस टीम यूएससीईआरटी के अनुसार जब कोई साफ्टवेयर पुराना होता है या फिर अनपैच्ड सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण ताजा कम्प्यूटर प्रोग्राम से विहीन होता है तो रैन्समवेयर उस पर आसानी से हमला कर सकता है। यह बात ध्यान देने की है कि कम्प्यूटरों पर ताजा हमला अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी से चोरी किए गए साइबर टूल्स से किया गया है। इस संबंध में माइक्रोसाफ्ट के प्रेसीडेंट ब्रैड स्मिथ ने दुनिया भर की सरकारों से अपील की है कि वे शुक्रवार से शुरू हुए साइबर हमलों को चेतावनी के रूप में लें। उन्होंने कहा कि ये खबरें काफी चौंकाने वाली हैं कि वर्तमान हमले की जड़ें अमरीकी राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी यानी एनएसए से जुड़ी हैं। उन्होंने कहा कि सरकारों को साइबर हथियारों के प्रति अपने रुख में बदलाव करने की जरूरत है। माइक्रोसाट से जारी एक बयान में कहा गया है कि हमने देखा है कि किस तरह सीआईए की अतिसंवेदनशील सूचनाओं को विकीलीक्स ने चुराया और अब एनएसए से ऐसी ही संवेदनशील सूचनाएं चोरी होने से दुनिया भर में कंप्यूटर्स प्रभावित हुए हैं। कम्प्यूटर्स विशेषज्ञ इस वायरस का भी कोई एंटी वायरस खोज निकालेंगे यह तय है। ऐसा भी संभव है कि इस एंटी वायरस प्रोग्राम का बाजार तैयार करने के लिए यह साइबर डकैती की गई है। लेकिन असली सवाल साइबर सुरक्षा और साइबर अपराधों पर रोक का है। जब अमरीका जैसा अतिविकसित देश, जहां तमाम बड़ी साफ्टवेयर कंपनियां काम करती हैं, वहां की सरकार इस अपराध से नहीं बच पाई है। तो भारत जैसे देश की बिसात ही क्या है, हमारे यहां कम्प्यूटर ज्ञान असंतुलित किस्म का है। एक ओर साटवेयर विशेषज्ञ हैं, जिनकी सेवाएं अमरीका जैसे देश लेते हैं तो दूसरी ओर बिजली विहीन गांव हैं। जिनके सरकारी स्कूलों डिब्बो की तरह कम्प्यूटर रखे हुए हैं सरकार का पूरा जोर है कि भारत का डिजीटलीकरण हो जाए, लेकिन इसकी तैयारी कितनी पुख्ता है, इस पर सवालिया निशान लगा हुआ है। अतिमहत्वपूर्ण लोगों के कम्प्यूटर, सोशल वेबसाइट से एकाउंट हैक हो चुके हैं। साइबर झांसे में फंसाकर करोड़ों की ठगी के मामले सामने आ चुके हैं। लेकिन इन अपराधों पर ही जब सरकार अंकुश नहीं लगा पाई है तो रैन्समवेयर जैसे आभासी अपराधियों का मुकाबला कैसे करेगी। आधार की अनिवार्यता जैसे नियमों से जनता का पूरा लेखा–जोखा सरकार रख रही है, लेकिन उस जानकारी को वह अपने तक सुरक्षित रखेगी। इसकी गारंटी क्या सरकार के पास है, नकद भुगतान बंद करने की कवायद करवाने वाली सरकार प्लास्टिक मनी की सुरक्षा किस तरह करेगी। विचारणीय यह भी है कि जब अमरीका की सुरक्षा एजेंसी में साइबर सेंध लग सकती है, तो क्या ईवीएम हैक नहीं हो सकती।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

देश का पता नहीं, भाजपा मजबूत हुई है

तीन साल पहले जब देश में नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री का पद संभाला तो उनकी पार्टी और समर्थकों द्वारा जनता को यही संदेश देने की कोशिश की गई कि अब लाचारगी के दिन खत्म हुए और अच्छे दिनों की शुरूआत हो रही है। भाजपा का तो चुनावी जुमला भी यही था कि अच्छे दिन आने वाले हैं। किस तरह चुनावी सभाओं में मंजे हुए वक्ता की तरह प्रधानमंत्री अच्छे दिन का मुखड़ा छेड़ते थे। जनता से यह सबक लगभग हर रैली और जनसभा में रटाया जाता था। जनता आज भी रट रही है कि....आने वाले हैं। अब भोली भाली जनता को यह नहीं पता कि आखिर अच्छे दिन कब आने वाले हैं। यूपीए सरकार के १० सालों की कमियां गिनाकर भाजपा ने इस आश्वासन के साथ सत्ता संभाली थी कि वह देश को एक मजबूत प्रधानमंत्री, मजबूत सरकार, मजबूत प्रशासन देगी। इन तीन सालों में भाजपा मजबूत हुई है, इसमें कोई दो राय नहींहै। लेकिन देश कितना मजबूत हुआ, इस सवाल का जवाब सरकार से अपेक्षित है। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह के लिए मौनमोहन सिंह जैसी अपमानजनक संज्ञा प्रसारित की गई, कि वे कुछ बोलते ही नहीं हैं। लेकिन खुद नरेन्द्र मोदी अपेक्षित अवसरों पर कितना बोलते हैं, इसकी समीक्षा भी होनी चाहिए। वे तभी बोलते हैं, जब उनका मन हो। मन की बात ही कहते हैं। उन्हें इस बात का शायद एहसास ही नहींहै कि देश रेडियो के फरमाइशी कार्यक्रम की तरह नहीं चल सकता। लोकतंत्र में बोलने, जनता से संवाद करने और जनता को बोलने की आजादी देने के कायदे हैं। जिनका सम्मान होना चाहिए। आपने हर महीने मन की बात कर दी, कुछ चिट्ठियों का जिक्र कर दिया। संसद में प्रश्नों के जवाब की जगह भाषण दे दिया, चुनावी सभाओं को संबोधित किया इससे आपकी जवाबदेही पूरी नहींहो जाती है। तीन साल में नरेन्द्र मोदी ने एक भी ऐसी प्रेस कांफ्रेंस नहीं की, जिसमें देश भर के मीडिया के पत्रकारों को सवाल पूछने की छूट मिले और वे उनका जवाब दें। इस मामले डा. मनमोहन सिंह का रिकार्ड उनसे अच्छा था। मोदीजी ने पत्रकारों को चाय पर अवश्य बुलाया और उनके साथ सेल्फी खिंचवाकर उन्हें उपकृत किया। कुछेक मीडिया संस्थानों को साक्षात्कार दिया, लेकिन उसमें भी पत्रकारिता के तकाजे पूरे होते नहीं दिखे। मीडिया को भी सोचना चाहिए कि प्रचार तो बहुत हुआ, अब सवाल भी पूछ लेना चाहिए। अब वक्त आ गया है कि प्रधानमंत्री और सरकार से सवाल किए जाने चाहिए। शुरू में तो कहा गया कि अभी काम करने दें, अभी तो सत्ता संभाली है। पर अब आधे से अधिक समय बीत गया है। जो प्रधानमंत्री पाकिस्तान को धमकी देते थे कि एक सिर के बदले दस सिर लाएंगे, वे जवानों की शहादत पर जिम्मेदारी से नहींबोलते हैं, तो उनसे पूछना चाहिए कि आपकी पाकिस्तान को लेकर सोच क्या है। अखलाक की मौत हो गई, वे मौन रहे, इसके बाद सिलसिला बढ़ता गया और पहलू खां तक प्रधानमंत्री मौन ही हैं। लोकतंत्र में विरोध और विपक्ष के लिए भी स्थान होता है, लेकिन इस सरकार में इसकी गुंजाइश भी खत्म हो रही है। प्रधानमंत्री से यह पूछना चाहिए कि आप सवालों से इतना घबराते क्यों हैं, जवाब देने में क्यों असहज महसूस करते हैं, विपक्षी सवाल उठाएंगे तो आपको जवाब देना चाहिए, लेकिन आप पिछले ६० सालों का रोना लेकर बैठ जाते हैं। यह टालमटोल क्या पूरे पांच साल चलेगी। नोटबंदी के बाद देश में हाहाकार मच गया, आपने कहा कि यह सब भ्रष्टाचार, आतंकवाद, नक्सलवाद पर लगाम लगाने के लिए है। तो यह सवाल पूछना चाहिए कि क्या जिन बुराइयों का जिक्र कर आपने ऐसा बड़ा कदम उठाया था, वे वाकई दूर हो गई हैं। अगर ऐसा है तो फिर सुकमा में जवानों की शहादत क्यों हुई, कश्मीर में आतंकवाद खत्म नहीं हुआ, बल्कि अब वहां के हालात और बुरे हो गए हैं। कश्मीर समस्या इतनी गंभीर कभी नहींथी, जितनी अब हो गई है। प्रधानमंत्री बार–बार कश्मीर गए हैं, वहां गठबंधन सरकार में भी भाजपा है, तो यह सवाल किया जाना चाहिए कि आखिर प्रधानमंत्री ने इस समस्या के समाधान के लिए कोई रोडमैप तो रखा होगा। वह कब इस्तेमाल किया जाएगा, कश्मीर के लोगों को अमन–चैन मिलेगा या नहीं। आप केवल समय तो नहीं बीता रहे कि दो साल में तो फिर चुनाव होंगे, तब तक कोई नया पैंतरा सोच लिया जाएगा। प्रधानमंत्री ने खूब विदेश यात्राएं कीं, अब यह प्रश्न पूछना चाहिए कि इन यात्राओं का हासिल क्या है। विश्व मानचित्र में भारत की स्थिति आपके कार्यकाल में कितनी मजबूत हुई है और पहले क्या स्थिति थी, इसकी तुलना होनी चाहिए। फिलहाल तो अमरीका, आस्ट्रेलिया आदि देशों में भारतीयों की नौकरियों, वीजा आदि पर संकट है। नेपाल, रूस, फिलीस्तीन आदि देशों में भारत के लिए सद्भाव हुआ करता था। क्या आपने कोशिश की कि यह सद्भाव बना रहे। युवा वर्ग को आपसे बड़ी उम्मीदें थीं, उन्हें नौकरियों का आश्वासन मिला था। वह आश्वासन कितना पूरा हुआ। महंगाई कम नहीं हुई, तो गृहणियों की परेशानी और बढ़ गई। शिक्षा के क्षेत्र में खास विचारधारा से प्रेरित होकर काम किया जाएगा। तो उसका खामियाजा विद्यार्थी और अंततः देश भुगतेगा। इस बारे में क्या आपने विचार किया है।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

अमरूद के सेवन से लाभ

✍ डॉ. ए.के. चतुर्वेदी

प्रकृति में अपार सम्पदाएँ विद्यमान हैं। इन सम्पदाओं का हमारे जीवन में विशेष महत्त्व है। ये सम्पदाएँ हमारे स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाती हैं। कुछ सम्पदाएँ विशेष मौसम में ही उपलब्ध होती हैं। उस विशेष मौसम के लिए आवश्यक पोषक तत्त्वों को उत्पन्न करती हैं, जो अच्छे स्वास्थ्य को बनाये रखने में सहायक होते हैं। अमरूद मौसमी फल है। यह वर्षा तथा सर्दियों में आता है। सर्दियों वाला फल अधिक लाभकारी होता है। मौसम के फलों व सब्जियों का सेवन करना आवश्यक है।

अमरूद के रासायनिक विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि अमरूद में खनिज तत्त्वों की भरमार है। इसमें कैल्शियम, फास्फोरस, आयरन, खनिज तत्त्व पाये जाते हैं। साथ ही विटामिन 'सी' और 'बी' भी पाये जाते हैं। कच्चा अमरूद गोलाकार गेंद के आकार का हरे रंग का होता है। यह

स्वाद में कसैला होता है। पकने पर पीला तथा मुलायम हो जाता है। साथ ही स्वाद भी मीठा हो जाता है। अमरूद केवल फल ही नहीं; अपितु आयुर्वेद के अनुसार औषधि भी है। यह पित्तनाशक है। इतना ही नहीं अमरूद रक्त विकार, उच्च रक्तचाप विकार में, दंत विकार में, पाचन तंत्र के विकार में लाभप्रद है। सिर दर्द होने पर कच्चे अमरूद को पीस कर सूर्योदय से पहले सिर पर लेप लगाने से लाभ मिलता है। अमरूद के कोमल पत्ते चबाने से मुँह के छाले ठीक हो जाते हैं। जुकाम–खाँसी होने पर अमरूद को भूनकर खाने से लाभ मिलता है। अमरूद के नियमित व समुचित मात्रा में सेवन करने से कब्ज दूर होता है।

पेट के रोगों में अमरूद पर काला नमक, काली मिर्च, अदरक के साथ खाने से लाभ मिलता है। उल्टी होने पर अमरूद के २० ग्राम पत्ते दो कप पानी में उबालें जब एक कप रह जाये तब छान कर पीने से लाभ मिलता है। अमरूद के मुरब्बा का सेवन करने से दस्त में लाभ पहुँचता है। पेट की जलन में अमरूद के गूदे में, बीजरहित, गुलाब जल, मिश्री मिलाकर पीने से लाभ मिलता है।

जोड़ों के दर्द में अमरूद के कोमल पत्ते पीस कर सरसों के तेल में पकायें। फिर बाँधने से लाभ पहुँचता है। बुखार होने पर अमरूद के पत्तों का काढ़ा पीने से लाभ मिलता है। अमरूद के पके फल से बीज निकाल कर छोटे–छोटे टुकड़े कर चासनी में डाल कर पकायें। यह हृदय के लिए बहुत ही लाभकारी है। पके हुए अमरूदों की सब्जी बहुत स्वादिष्ट होती है। यह सब्जी मीठी होती है। अमरूद का सेवन पाचन तंत्र को सुदृढ़ करने में सहायक है। अमरूद के सेवन से पाचन क्रिया सुचारू रूप से चलती है। पाचन क्रिया के सुचारू रूप में चलने से विभिन्न उपापचय क्रियाएँ सुचारू रूप से चलती हैं। इससे स्वास्थ्य अच्छा रहता है। अच्छा स्वास्थ्य ही जीवनका आधार है। अच्छे स्वास्थ्य के कारण ही जीवन में उमंग, उत्साह, उल्लास, स्फूर्ति बनी रहती है। अच्छा स्वास्थ्य होने पर ही जीवन की उपलब्धियों का आनन्द प्राप्त किया जा सकता है। अच्छा स्वास्थ्य जीवन को सार्थक बनाने में सहायक है।

अमरूद खाने का समय दोपहर के बाद है। भोजन के उपरान्त का समय बहुत ही अनुकूल होता है। अमरूद खाली पेट नहीं खाना चाहिए; क्योंकि खाली पेट खाने से गैस अधिक बनती है, जो कष्टकारी होता है। उपरोक्त विवरण से पूर्णतया स्पष्ट है कि मौसम के फलों का सेवन नियमित एवं समुचित मात्रा में करना लाभप्रद होता है। अमरूद का सेवन पाचन क्रिया को सुचारू रूप से नियंत्रित करता है।

सूर्योदय होगा

आदित्य उदय के साथ–साथ यू.पी. का भाग्योदय होगा।
निर्बल, निर्धन, निरीह सबका, विश्वासी आत्मोदय होगा।
अब अत्याचार दबंगों का, इक भूतकाल बन जाएगा।
सच्चे सज्जन और देशभक्त, मानव–सीना तन जाएगा।
अब तुष्टिकरण नहीं होगा, नीति होगी समभाव सहज–
छलनी में अब अनुशासन की हर भेदभाव छन जाएगा।
गुण्डागर्दी या छेड़छाड़ अब चलेगी अपने पाँव नहीं।
या तो सुधरेंगे दुष्ट सभी, या सक्रिय दण्डोदय होगा।
अब वेद ऋचाएँ गूँजेंगी, भगवा ध्वज नभ में फहरेगा।
गंगा निर्मल हो जाएगी, अमृत गंगाजल लहरेगा।
गौहत्या प्रतिन्धित होगी, रूक जाएँगे अपहरण–लूट–
इसके विरुद्ध चलने वाले, के सांस न तन में ठहरेगा।
अब तक का अन्धकार काला, बस पूर्ण लुप्त हो जाएगा।
चहुँओर उजाला बिखरेगा, अब नया सूर्योदय होगा।
अब बाँट न पाएगा अन्धा, रेवड़ियाँ अपने–अपने को।
शासन देगा सहयोग सभी, गुणवान मनुज के सपनों को।
उत्तर प्रदेश जो बदतर था, उत्तम प्रदेश बन जाएगा–
उपलब्ध सुरक्षा सुविधा भी, होगी माताओं–बहनों को।
झगड़े–दंगे रुक जाँएगे, मन्दिर निर्मित हो जाएगा।
सबके मन में अब मिल–जुलकर, रहने का भाव उदय होगा।
अब मुफ्त चिकित्सा सुविधा का, हो भी सकता है प्रादुर्भाव।
आदिवासी क्षेत्रों में भी, सुविधा का ना होगा अभाव।
तेजाब काण्ड, अपहरण, लूट या बलात्कार के दोषी सब–
या जेल में जीवन काटेंगे या बदलेंगे अपना सुभाव।
काले धन्धे या कालाधन का, कैक्टस कहीं न उपजेगा।
सिचिंत होगी भू स्नेहसिक्त, यूँ देश में अरुणोदय होगा।
घर–घर में शौचालय होंगे, हर गाँव–गाँव में विद्यालय।
अति दूर गाँव के क्षेत्रों में, भी खुल जाएँगे शिक्षालय।
परिवहन सड़क, बिजली–पानी उपलब्ध रहेगी सारे दिन–
मंत्री कर्त्तव्यनिष्ठ होंगे, अब सजग रहेंगे मंत्रालय।
अब स्वहत्या करने हेतु, होगा मजबूर किसान नहीं।
योगी–मोदी के सपनों का, भारत में ग्रामोदय होगा।

हितेश कुमार शर्मा

दलहनी फसल

✍ डॉ. रमाकान्त पाण्डेय

आज देश की नब्बे प्रतिशत जनता दाल के महत्त्व और उसकी कीमत समझने के लिए बाध्य है। किसान भाई आप अन्नदाता हैं आपसे प्रार्थना है अभी भी कुछ खास नहीं बिगड़ा है। अपनी खाली जमीन पर पी.एच. मान के अनुसार दाल की फसल का चुनाव करें शीघ्रातिशीघ्र दाल की फसल की बोआई करें। दालों में मुख्य चना, मटर, मसूर, मूँग, बकला आदि के बीज आसानी से मिल जाएँगे और आप अपने फसल की भरपूर कीमत पाएँगे। ध्यान देने योग्य बात यह है कि अन्य फसलों के समान दालों में पानी की खपत कम होती है और खाद भी बहुत कम देने की जरूरत पड़ती है क्योंकि दाल वाली फसलों की जड़ों में गाँठें बनती हैं और इन गाँठों में सूक्ष्म जीवाणुओं का आवास और निवास स्थापित हो जाता है। जो वायुमंडल से सीधे–सीधे नाइट्रोजन का अवशोषण कर नाइट्रेट और अमोनिया आयन का निर्माण करते हैं। विभिन्न रासायनिक क्रियाओं के फलस्वरूप इन आयनों में समायोजन और विलोचन की अभिक्रिया होती है और अमीनो अम्ल या अमीनो एसिड बन जाते हैं। जो दालों के दानों में संग्रहित हो जाते हैं जो प्रोटीन के रूप में हमारे भोजन से हमारे सम्पोषण के द्वारा पौष्टिकता प्रदान करते हुए संरक्षण–संवर्धन और शारीरिक उपापचयी क्रियाओं का सफल सम्पादन करते हैं जिससे व्यक्ति स्वस्थ और तन–मन से बलिष्ठ बनता है और बलिष्ठ व्यक्ति ही समाज का कार्य सफलतापूर्वक सम्पादित कर सकता है। इस प्रकार दाल के महत्त्व को समझना चाहिए। दाल का दूसरा पक्ष यह है कि दाल के कारण भोजन में स्वाद और स्वाद से रुचि बढ़ती है और जो रुचि वही पची। अतः दाल की खेती अवश्य करें। दाल की खेती में ध्यान देने योग्य बात यह है कि जोताई और खेत की तैयारी इस प्रकार करें कि खेत की नमी बनी रहे। इससे फसल चक्र बना रहता है। मिट्टी की पौष्टिकता कायम रहती है और क्षमता बढ़ती है। जीवाणुओं की पर्याप्त मात्रा बनी रहने के कारण मिट्टी उपजाऊ होती है इसलिए दाल वाली फसलों में अजोला का प्रयोग न करें। आमतौर पर मिट्टी में नाइट्रोन की कमी के लिए अजोला प्रोडक्ट का प्रयोग किया जाता है। जबकि दाल वाली फसलें स्वयं नाइट्रोजन का उपयोग करने में सक्षम हैं। अगर भूलकर भी दाल में अजोला का प्रयोग करेंगे तो फसल खूब लहलहाती नजर आएगी पर उस अनुपात में फूल नहीं लगेंगे, फूल लग भी गए तो फल्ली नहीं बनेगी। अगर एक दो फल्ली नजर आ भी जाए तो दाने नहीं मिलेंगे। अगर दाने हो भी गए तो इनमें अंकुर नहीं होगा अर्थात सारी फसल देखने लायक होकर रह जाएगी। इस बार तो मात्र चौती दाल पर ही संतोष करें पर आगे के लिए तैयारी करें–गरमा मूँग, उरद बरसाती, मूँग उरद, अरहर, सोयाबीन, राजमा, मूँगफली लोबिया, सेम, मोट, ग्वार और फिर वही रवि यानि चैती के चना, मटर, मसूर, बकला, खेसारी इसकी कमी सरकार पर अधि नहीं तो कल पड़ेगी बहुत भारी किसान भाई आप अन्नदाता हैं स्वीकार कीजिए ये है आपको जिम्मेबारी।

**आगे जमकर दिल लगाकर
करें तैयारी।
खूब उपजाएँ गरमा फल-सब्जि
तरकारी।
बनाएँ स्वास्थ्य दूर रहे बीमी।
गर आमदनी ठीक रहे तो
काहे की भारा भारी।
किसान भाई बहुत सारी
सुविधा है सरकारी
उसका भी लाभ उठाएँ
बारी-बारी।**

निर्जला एकादशी साधना का अनूठा पर्व

डॉ.गोविंद बल्लभ जोशी

जेष्ठ शुक्ल पक्ष की एकादशी को निर्जला एकादशी कहा जाता है। एक ओर जयेष्ठ मास की भीषण गर्मी जिसमें सूर्यदेव अपनी किरणों की प्रखर ऊष्मा से मानो अग्नि वर्षा कर रहे हों दूसरी ओर श्रद्धालु धर्म प्राण जनता द्वारा दिन भर निराहार एवं निर्जल उपवास रखना।

सूर्योदय से सूर्यास्त तक ही नहीं अपितु दूसरे दिन द्वादशी प्रारंभ होने के बाद ही व्रत का पारायण किया जाता है। अतः पूरे एक दिन एक रात तक बिना पानी के रहना वह भी इतनी भीषण गर्मी में यही तो है भारतीय उपासना पद्धति में कष्ट सहिष्णुता की पराकाष्ठा।

हमारे धर्मग्रंथों में इस पर्व को आत्मसंयम की साधना का अनूठा पर्व माना गया है। निर्जला एकादशी पर्व राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं व्यापारिक संगठनों द्वारा बड़े भक्ति भाव से मनाया जाता है। इस उपासना का सीधा संबंध एक ओर जहाँ पानी न पीने के व्रत की कठिन साधना है वहीं आम जनता को पानी पिलाकर परोपकार की प्राचीन भारतीय परंपरा भी।

मठ, मंदिर एवं गुरुद्वारों में कथा प्रवचन धार्मिक अनुष्ठान एवं शबदकीर्तन आदि के कार्यक्रम जहाँ दिन भर चलते हैं वहीं शीतल जल के छबीले लगाकर रहगीरों को बुला-बुला कर बड़ी आस्था के साथ पानी पिलाया जाता है। बस स्टैंडों के आसपास पानी के छबील लगाकर अनेक धार्मिक संगठन दिन भर शीतल जल का वितरण करना बड़े पुण्य का कारण मानते हैं।

निर्जला एकादशी को पानी का वितरण देखकर आप के मन में एक प्रश्न अवश्य आता होगा कि जहाँ इस दिन के उपवास में पानी न पीने का व्रत होता है तो यह पानी वितरण करने वाले कहीं लोगों का धर्म भ्रष्ट तो नहीं कर रहे हैं लेकिन इसका मूल आशय यह है कि व्रतधारी लोगों के लिए यह एक कठिन परीक्षा की ओर संकेत करता है कि चारों ओर आत्मतुष्टि के साधन रूप जल का वितरण देखते हुए भी उसकी ओर आपका मन न चला जाए। साधना में यही होता है कि साधक के सम्मुख सारे भोग पदार्थ स्वयमेव उपस्थित हो जाते हैं। वस्तु प्रदार्थ उपलब्ध होते हुए उनका त्याग करना ही त्याग है। अन्यथा उनके

न होने पर तो अभाव कहा जाएगा। अतः अभाव को त्याग नहीं कहा जा सकता। दूसरी ओर जो लोग व्रत नहीं करते लेकिन गर्मी के कारण आकुल हो जाते हैं और उनको ऐसी स्थिति में एक गिलास शीतल पानी मिल जाता है तो उनकी आत्मा प्रसन्न हो जाती है। अतः इस उपासना का सीधा संबंध एक ओर जहां पानी न पीने के व्रत की कठिन साधना है वहीं आम जनता को पानी पिलाकर परोपकार की प्राचीन भारतीय परंपरा भी।

निर्जला एकादशी के बारे में योग दर्शन के मनीषी आचार्य चंद्रहास शर्मा कहते हैं कि पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु इन पाँच तत्वों से ही मानवदेह निर्मित होता है। अतः पाँचों तत्वों को अपने अनुकूल बनाने की साधना अति प्राचीन काल से हमारे देश में चली आ रही है। अतः निर्जला एकादशी अन्नमय कोश की साधना से आगे जलमय कोश की साधना का पर्व है। पंचतत्वों की साधना को योग दर्शन में गंभीरता से बताया गया है। अतः साधक जब पाँचों तत्वों को अपने अनुकूल कर लेता है तो उसे न तो शारीरिक कष्ट होते हैं और न ही मानसिक पीड़ा। साथ ही साधना द्वारा कष्टों को सहन करने का अभ्यास हो जाने पर समाज में एक दूसरे के प्रति सहयोग की भावना जागती है।

निर्जला एकादशी व्रत के बारे में महाभारत में महर्षि वेदव्यास के वचन हैं कि पूरे वर्ष में होने वाली एकादशी जिनमें अधिमास भी सम्मिलित है यदि कोई न कर सके तो भी वह निर्जला एकादशी का व्रत करता है तो उसे सभी एकादशियों के व्रत का पुण्य फल प्राप्त होता है। इसीलिए व्यास जी ने भीम सेन को निर्जला एकादशी व्रत करने की प्रेरणा दी क्योंकि जठराग्नि तीव्र होने के कारण भीम सेन बिना खाए रह ही नहीं सकते थे। अतः भीमसेन ने वेद व्यास जी की प्रेरणा से इस व्रत को किया। निर्जला एकादशी के दिन भगवान विष्णु की आराधना की जाती है। लोग ग्रीष्म ऋतु में पैदा होने वाले फल, सब्जियाँ, पानी की सुराही, हाथ का पंखा आदि का दान करते हैं। इस उपासना में कौटिल्य अर्थशास्त्र के वस्तुविनिमय के भी दर्शन होते हैं क्योंकि धन की अपेक्षा साधन या वस्तुओं को उपलब्ध कराकर समाज तुरंत लाभांवित होता है। इसलिए इस व्रत के दिन प्राकृतिक वस्तुओं के दान का बड़ा महत्व बताया गया है। आर्थिक रूप से समर्थवान लोग प्राकृतिक वस्तुओं के साथ,

शेष पृष्ठ 11 पर

मोदी जी द्वारा किए गए अप्रिय कार्य (जनवरी-मार्च २०१७)

१. सरकारी कर्मचारियों का दो प्रतिशत डी० ए० बढ़ाया गया है।

– कांग्रेस सदैव हर बार छह प्रतिशत की बढ़ोतरी करती थी।

२. अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए संचालित मल्टीसेक्टोरल योजना पर मोदी सरकार मेहरबान हो गई है।

– यह योजना "सब का साथ–सब का विकास" नीति के अनुकूल नहीं है अतः यह योजना बन्द कर देनी चाहिए।

३. उर्स के अवसर पर अजमेर शरीफ दरगाह पर चादर चढ़ाने के लिए आपने दो मंत्रियों को भेजा है।

– ऐसा लग रहा है कि अब मोदी जी भी नेहरू नीति पर चल कर तुष्टिकरण करने लगे हैं।

४. जाट–गुर्जर–मराठा–पटेल जातियों को सन्तुष्ट करने के लिए लिए राष्ट्रीय सामाजिक एवं शैक्षणिक पिछड़ा वर्ग आयोग बनाने की तैयारी हो रही है जिसे संवैधानिक निकाय का दर्जा भी मिलेगा।

– सम्पन्न, दबंग, उच्च जाति वालो को भी यदि पिछड़े का लाभ दे दिया गया तो जो सदियों से कमजोर, अशिक्षित, दबे हुए रहे हैं तो उनका विकास रूक जाएगा।

–चूंकि मुस्लिमों और ईसाइयों में जातियां नहीं होती हैं और वे अल्पसंख्यक का लाभ ले रहे हैं इसलिए इन्हें पिछड़े वर्ग में शामिल करने की गलती नहीं की जानी चाहिए।

५. पंजाब में अच्छे पैमाने पर नशीली वस्तुओं की तस्करी लगातार होती रही जिससे युवक नशे के आदी होते जा रहे थे। राज्य सरकार (अकाली दल–भाजपा) ने कानून को न तो सख्त किया और न ही मोदी सरकार ने इसे रोकने में विशेष दिलचस्पी ली।

– मार्च के विधान सभा चुनावों में १३१ वर्षीय बूढ़ी कांग्रेस ने प्रचण्ड बहुमत से शानदार सफलता प्राप्त की। भाजपा की करारी हार हुई।

६. सर्वोच्च न्यायालय और राष्ट्रपति ने पंजाब को सतलुज नदी का पानी हरियाणा को देने का निर्णय दिया जबकि अकालियों ने कहा कि वे एक बूंद पानी भी नहीं देंगे। पंजाब की भाजपा चुप रही। हरियाणा की भाजपा सरकार ने कहा कि वह पंजाब के वाहनों को हरियाणा होकर नहीं जाने देंगे।

– दो राज्य ऐसे लड़ रह हैं जैसे दो देश लड़ते हैं। ऐसी शर्मनाक स्थिति में मोदी जी का मौन रहना उचित नहीं लगता है।

७. कश्मीर घाटी में आतंकवादी तथा अलगाववादी युवकों को पैसे देकर बन्दूकें चलवा रहे हैं और पत्थर बाजी करा रहे हैं। जीवन असामान्य हो गया है। पर्यटकों के कम आने से लोगों की आय कम हो रही है और राज्य सरकार को भी राजस्व कम मिलता है।

– मोदी जी को अप्रत्यक्ष रूप से कह देना चाहिए कि 2018 में राज्य में स्थिति सामान्य हो जाएगी।

८. दिल्ली के तीनों नगर निगमों में भाजपा सत्तारूढ़ है। सफाई कर्मचारियों –बाल्मीकियों को कई कई माह का वेतन न मिलने से उन्होंने कई बार हड़तालें की और कूड़ों को मंत्रियों की कोठियों के आगे फेंक कर बड़े बड़े ढ़ेर लगा प्रर्दशन किए।

– मोदी जी के कार्यकाल में ऐसे अशोभनीय कार्य होने से उनकी प्रतिष्ठा और साख कम हुई अतः भविष्य में ऐसे कार्य न हों जिसकी व्यवस्था की जानी चाहिए।

९. दिल्ली पुलिस केन्द्रीय गृह मन्त्री के अधीन है। फास्ट ट्रैक कोर्ट बनी हुई है फिर भी राजधानी में छोटी छोटी बालिकाओं, कॉलेज की लड़कियों और युवतियों पर रेप, गैंगरेप, यौन उत्पीड़न की शर्मनाक घटनाएँ मुम्बई से ७ गुना ज्यादा होती हैं। चोरी, डकैती, अपहरण, लूटमार, धोखा धड़ी जैसी घटनाएँ भी अच्छी मात्रा में होती हैं अतः दिल्ली पुलिस को अपराध रोकने का विशेष प्रशिक्षण दिया जाए। विदेशी पर्यटकों से अनुचित व्यवहार हर प्रकार से निन्दनीय है।

१०. तमिल नाडु के काफी किसान नई दिल्ली के जन्तर–मन्तर पर धरना देकर अपनी मांगे पूरी कराना चाहते हैं।

– दूरदर्शन पर भी कई बार दिखाया गया है कि किसानों ने कम वस्त्र पहने हुए होते हैं और मुंह में सांप दबाये हुए होते हैं। हजारों किलोमीटर की दूरी से आए हुए किसानों की मांगों को पूरा करने का प्रयास मोदी सरकार को शीघ्र करना चाहिए।

आई० डी० गुलाटी, बुलन्दशहर

धर्मान्तरण को अपना अधिकार समझती हैं ईसाई मिशनरियाँ

✍ हरिकृष्ण निगम

ईसाई मिशनरी जो अन्तर्राष्ट्रीय चर्चों के विपुल संसाधनों के सहारे आज एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी की शैली में इस देश में मतान्तरण को अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानने लगे हैं। वे इस भ्रम में है कि २१ वीं सदी में दक्षिण पूर्वी एशिया में ''पतित आत्माओं का सुनियोजित उद्धार'' करना उनका दैवी दायित्व है। विशेषकर हमारे देश में गरीब आदिवासियों तथा जनजातियों को वे एक अलग पहचान देकर एक नए वर्ग संघर्ष को भी जन्म दे रहे हैं ईसाई धर्म प्रचारक या इवेन्जेलिस्ट अनेक देशों की पारम्परिक संस्कृतियों व उनके पुरखों के विश्वासों को नष्ट करने के मन्तव्य से गैर ईसाईयों को प्रलोभन देते हैं। यह छल है जिसमें न अन्तरात्मा की आवाज का प्रश्न हैं, न किसी तरह की धर्म प्रवणता। उन्हें भूलना नहीं चाहिए कि संगठित चर्च स्वयं ईसामसीह के मूल सन्देश के विरुद्ध काम कर रहे है एक ओर जब आधुनिक विश्व विविधताओं के पीछे की एकता भी काम कर रही हैं, लोगों को धर्मान्तरित करने की जिद के पीछे कोई तर्क नहीं है। यह स्पष्ट रूप से मानवाधिकार का उल्लंघन नहीं

तो और क्या है? यदि यह साधारण सत्य समझ लिया जाए तो आस्थाओं के संघर्ष के पीछे के दुष्प्रचार, घृणा, हिंसा व रक्तपात सिर्फ एक विक्षिप्तता से कम नहीं लगता हैं। यह एक सामान्य बात है कि भारत जैसे देश में यदि गरीबी, विपन्नता अथवा मात्र सामाजिक विषमता की नई पहचान के मुद्दे मूल होते तब आर्थिक पिछड़ेपन के हल की तलाश के लिए कदाचित हमारे मार्क्सवादी ही उनके सबसे बड़े मसीहा होते। यदि पिछड़े वर्ग की पहचान ही मात्र राजनीतिक सम्मोहन का आज एक बडा कारक होता तब शायद प्रकाश करात जैसे लोग उत्तर प्रदेश में सत्ता में होते, मायावती नहीं। इसी तरह चाहे मुस्लिम हों या हिन्दू अपनी धार्मिक पहचान से परे साम्यवादियों की कथित नास्तिकता को वे कभी नहीं समझेंगे सर्वहारा वर्ग की क्रान्ति के नारों का नशा भी उस समय तक ही चढ़ता है जब विपन्नता, विषमता व भूख की बातों में विचारधारा की चिनगारी अथवा सत्ता का जादू ढाला जाता है। पर यह सब राजनीतिज्ञों का एक क्रूर खेल बन जाता है जिसमें बन्दूक या तोप की नली में वे आम आदमी को बारूद की तरह प्रयुक्त करना चाहते हैं। भारत में हर असुरक्षित वर्ग को नई पहचान के लिए आश्वस्त कराने का खेल आज विदेशी मिशनरी भी खेल रहे हैं। उनकी दृष्टि में जनजातीय इलाकों के लोग या दलित हिन्दू नहीं है– यह घृणित प्रचार ही मतान्तरण की सुनहरी चाभी हैं। इस वर्ग की शिकायतें कल्पित नहीं है और न ही किसी चीज का बहाना है पर चर्च उन्हें धर्मान्तरण का जादू भरा मोड़ दिखाकर, समाज की विषमताओं का लाभ उठाकर, विस्फोटक बना रहा है। आज यह स्पष्ट है कि अर्न्तराष्ट्रीय चर्च सम्प्रदायों के हाथ बहुत लम्बे हैं और उनकी विकासशील देशों में सत्ता पर बैठे लोगों के बीच पकड़ काफी गहरी हैं। तभी जैसे ही दक्षिण के कुछ राज्यों के चर्च सभागृह या उड़ीसा में प्रतिक्रिया स्वरूप हमले हों, वह रोम, वाशिंगटन, पेरिस अथवा योरोपीय संघ द्वारा भारत की खुली भर्त्सना करवा सकता है। इन धार्मिक स्थलों पर हमलों को तर्क सम्मत कभी नहीं कहा जा सकता है पर मुद्दा सिर्फ इतना नहीं हैं क्योंकि विपक्षियों को आतंकवाद से ध्यान बटांने के लिए यह नया विषय बड़े संयोग से प्राप्त हुआ हैं। बहुसंख्यकों को इस स्थिति पर चिन्तित होना स्वाभाविक है क्योंकि वे स्वयं देख रहें हैं कि देश के प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह जब वाशिंगटन में और पेरिस में थे वहाँ के नेताओं नें कडी आलोचना कर उन्हें असमंजस में डाला था। पर वहीं पर जब प्रत्युत्तर में हमारे प्रधानमंत्री ने कहा कि तत्ववादी ईसाई मिशनरी भारी अनुदानों के बल पर धर्मप्रचार के साथ–साथ हिन्दू धर्म पर अपशब्दों के साथ–साथ मर्मान्तक आघात भी पहुंचा रहे है वे आराध्य देवी देवताओं पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने से भी नहीं चूकते हैं। जब हिन्दू संकट में होते हैं तब चाहे मलयेशिया हो या मास्को अथवा श्रीलंका हमारे प्रधानमंत्री को एक शब्द भी उनके पक्ष में बोलना नहीं आता हैं। शायद इसलिए कि हम एक अनोखे शेष पृष्ठ 11 पर

आध्यात्मिक आंदोलन ही पूर्ण आजादी लाएगा

✍ विवेक गोयल

अपने देश के विकास की कथा–गाथा अत्यंत प्राचीन एवं समृद्ध है। इस समृद्धि और संपन्नता के पीछे त्याग परंपरा को जीवित रखने के वर्तमान तत्त्व कमजोर भले ही पड़ गए हैं, परंतु अभी शिथिल एवं समग्र विकास की राह पर अग्रसर है। बीच में अपने राष्ट्र की स्थिति हमसे संभल न पाने के कारण इसकी कमान विदेशी आक्रांताओं के हाथों में चली गई थी। हमारे तमस् और घोर जड़ता की जड़ों में फिर से प्राण फूँकने के लिए यह भी आवश्यक था। इस प्रभाव को उखाड़ फेंका और हम आजादी की खुली साँस लेने लगे। आज फिर से आजादी को खतरा है। यह खतरा बाहरी नहीं, आंतरिक है। भारत के उत्थान के विचार और कर्म के मूल में निहित एक विराट–व्यापक एवं उच्चतर शक्ति की कहानी है। आज हमने अपने विकास को केवल आर्थिक मानदंडों तक सीमित कर दिया है। आर्थिक समृद्धि एवं संपन्नता को सर्वोपरि मानना हमारे राष्ट्र का नहीं, पाश्चात्य राष्ट्रों का सिद्धांत है। अपनी स्वतंत्रता इन चीजों से नहीं मिलने वाली है। अपरिपक्व, उच्छृंखल, अंधानुकरण एवं नैतिकताविहीन आचरण से न तो हम विजयी हो सकते हैं और न ही समग्र विकास कर सकते हैं। ऐसे आचरण हमें आंतरिक रूप से खोखला और बौना बनाते हैं।

महर्षि अरविंद कहते हैं कि भारत की आध्यात्मिकता, भारत की साधना, तपस्या, ज्ञान, कर्म, भक्ति ही हमें स्वतंत्र और महान बनाएगी। आध्यात्मिकता का अर्थ है अपने अस्तित्व का ज्ञान। वह ज्ञान जो हमें बोध कराए कि हम कौन हैं, क्यों हैं और हमारा उद्देश्य एवं लक्ष्य क्या है? जब तक हम स्वयं को नहीं पहचान पाएँगे, यह कैसे जान पाएँगे कि हमारी स्वयं के एवं राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी क्या है। स्वयं को ठीक से जान लेने के पश्चात, अपनी सामर्थ्य और शक्ति को पहचान लेने के बाद ही हम किसी कार्य के अंतर्संबंधों को परख सकते हैं। अतः अपने राष्ट्र को समग्र रूप से विकसित करने के लिए बौद्धिक या आर्थिक आंदोलन की नहीं, बल्कि आध्यात्मिक आंदोलन की आवश्यकता है। गत शताब्दी के आंदोलन की असफलता के पीछे केवल बौद्धिकता का होना था। बुद्धि सदैव किसी परिस्थिति को भांपने, समझने के लिए पर्याप्त नहीं होती, इसके पीछे ज्ञानदीप्त हृदय का होना आवश्यक है। बुद्धि एकांगी है, वह हर चीज को अपने ढंग से सोचती–विचारती है और उसकी अपनी निश्चित सीमाएँ भी हैं, परंतु इसके साथ हृदय अर्थात प्रगाढ़ भावनाओं का सम्मिश्रण परिस्थितियों को ठीक–ठीक परखने और उसकी समस्याओं का सही निदान प्रस्तुत करने में सहायक है।

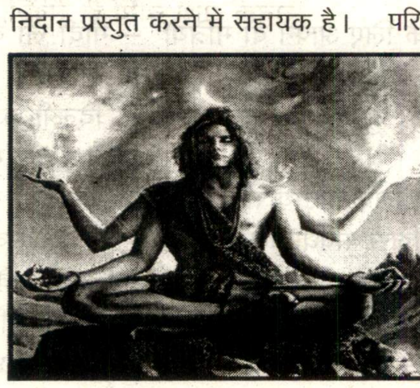

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से ओतप्रोत रहा था।

इस राष्ट्रीयतावाद ने हृदय की महत् प्रेरणाओं को अधिक वेग से, अधिक तेजी से और बड़ी कुशलता के साथ विवेकपूर्ण बौद्धिक क्रियाओं में सामंजस्य एवं संयोग करने का प्रयास किया था, परन्तु यह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में पूरी तरह सफल नहीं रहा; क्योंकि इसमें भावना, संवेदना एवं आकांक्षा का पक्ष तो अपनी भारतीय संस्कृति की अविरल भावधारा से जुड़ा था, परंतु क्रिया और व्यवहार में हम यूरोपीय विचारधारा से अलग नहीं हो सके। इस वाद ने परिस्थिति की जटिलता को पहचानने, यथार्थता को जानने, अपनी लघुता एवं समस्याओं को परखने तथा गहरी अंतदृष्टि प्राप्त करने के लिए बुद्धि से सहायता ली, परंतु प्रज्ञा का पर्याप्त आश्रय इसे अनुपलब्ध रहा। ऐसा ज्ञान जिससे वर्तमान के प्रयोगों से भविष्य में होने वाले प्रभाव शामिल होते हैं, ठीक से नहीं जाना जा सका। राष्ट्रीयतावाद ने कल्पनाएँ गढ़ी। अनेक आदर्शों को अपनाया और इनसे उसे लाभ भी मिला और जन–समर्थन भी। पूरा राष्ट्र संगठित हुआ और लगा कि इस आंदोलन से ब्रिटिश साम्राज्य की नींव ही नहीं हिलेगी, वरन उसे अपने कार्य–व्यापार सहित भारत की राजनीति से भी दूर जाना पड़ेगा। इन सबके बावजूद यह गंभीरतम सत्य को देखने और ईश्वर की इच्छा को समझ पाने में सर्वथा असमर्थ रहा। इस आंदोलन में जोश एवं उत्साह की कमी नहीं थी, बल्कि शताब्दियों में इस राष्ट्र की जड़ता क्रियाशील हुई थी। ऐसा आवेग और उत्साह शताब्दियों के बाद मिला था, परंतु इसमें उस इच्छाशक्ति और पवित्र बल का अभाव था, जो किसी भी आवेगमय अनुभव से कहीं अधिक महान और तीव्रतम होता है। इस राष्ट्रीयतावाद को सूक्ष्म और स्थूल दोनों, दोनों स्तरों पर बल मिला था।

स्थूल रूप से महात्मा गाँधी, बालगंगाधर तिलक, सुभाषचंद्र बोस, गोखले, नेहरू, चाफेकर बंधु, भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला जैसी दिव्य हुतात्माओं का महती योगदान था। सूक्ष्मरूप में श्री अरविंद, रमण महर्षि, स्वामी विवेकानन्द एवं हिमालय की दिव्य आत्माओं की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। श्री अरविन्द स्वतंत्रता आंदोलन के महानायक थे; हालाँकि इसका स्थूल शेष पृष्ठ 10 पर

समान नागरिक संहिता क्यों आवश्यक है...?

विनोद कुमार सर्वोदय

समान नागरिक संहिता का प्रावधान हमारे संविधान में आरंभ (१९५०) से ही है और इसे धीरे–धीरे लागू करने की अनुशंसा अनुच्छेद ४४ में की गयी है। परन्तु मुस्लिम वोट बैंक के लालच में व इमामों के दबाव में तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरु जी ने अनेक विवादों के बाद भी समान नागरिक संहिता के प्रावधान को संविधान के मौलिक अधिकारों की सूची से हटा कर नीति निर्देशक तत्वों में डलवा दिया। परिणामस्वरुप यह विषय न्यायपालिका के अधिकार क्षेत्र से बाहर हो गया और वह अब केवल सरकार को इस कानून को बनाने के लिए परामर्श दे सकती बाध्य नहीं कर सकती। अनेक विवादों के बाद भी सुधार के लिए हिन्दुओ के पर्सनल लॉ होने के उपरांत भी १९५६ में हिन्दू कोड बिल थोपा गया था। परंतु अन्य धर्मावलंबियों के पर्सनल लॉ को यथावत बनाये रखने की क्या बाध्यता थी जबकि उनमे भी आवश्यक सुधारों की आवश्यकता अभी भी बनी हुई है। ऐसा क्यों नही हो सका इसका उत्तर धर्म निरपेक्षता के बुर्के में ढक जायेगा। यह अत्यधिक दुर्भाग्यपूर्ण है कि पिछले ३०–३५ वर्षो में ५–६ बार उच्चतम न्यायालय ने समाज में घृणा, वैमनस्यता व असमानता दूर करने के लिए समान कानून को लागू करना आवश्यक माना है फिर भी अभी तक कोई सार्थक पहल नही हो पायी। लगभग १५–२० वर्ष पूर्व में किये गए एक सर्वे के अनुसार भी ८४ प्रतिशत जनता इस कानून के समर्थन में थी। इस सर्वे में अधिकांश मुस्लिम माहिलाओं व पुरुषो ने भी भाग लिया था। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी सन् २००० में समान नागरिक व्यवस्था के लिये भारत सरकार को परामर्श दिया था। क्या यह राष्ट्रीय विकास के लिए अनिवार्य नहीं? क्या सबका साथ व सबका विकास के लिए एक समान कानून व्यवस्था बनें तो इसमें आपत्ति कैसी?

विश्व में किसी भी देश में धर्म के आधार पर अलग अलग कानून नहीं होते सभी नागरिकों के लिए एक सामान व्यवस्था व कानून होते है। केवल भारत ही एक ऐसा देश है जहां अल्पसंख्यक समुदायों के लिए पर्सनल लॉ बनें हुए है। जबकि हमारा संविधान अनुच्छेद १५ के अनुसार धर्म, लिंग, क्षेत्र व भाषा आदि के आधार पर समाज में भेदभाव नहीं करता और एक समान व्यवस्था सुनिश्चित करता है। परंतु संविधान के अनुच्छेद २६ से लेकर ३१ तक से कुछ ऐसे व्यवधान है जिससे हिंदुओं के सांस्कृतिक, शैक्षिक, धार्मिक संस्थानों व धार्मिक ट्रस्टो को विवाद की स्थिति में शासन द्वारा अधिग्रहण किया जाता आ रहा है। जबकि अल्पसंख्यकों के संस्थानों आदि में विवाद होने पर शासन कोई हस्तक्षेप नही करता. ...यह विशेषाधिकार क्यों? इसके अतिरिक्त एक और विचित्र व्यवस्था संविधान में की गई कि अल्पसंख्यको को अपनी धार्मिक शिक्षाओं को पढ़ने की पूर्ण स्वतंत्रता रहेगी। जबकि संविधान सभा ने बहुसंख्यक हिन्दूओं के लिए यह धारणा मान ली कि वह तो अपनी धर्म शिक्षाओं को पढ़ाते ही रहेंगे। अतः हिन्दू धर्म शिक्षाओं को पढ़ाने को संविधान में लिखित रुप में प्रस्तुत नही किये जाने का दुष्परिणाम आज तक हिन्दुओं को भुगतना पड़ रहा है।

हमारे संविधान में अल्पसंख्यकों को एक ओर तो उनको अपने धार्मिक कानूनों (पर्सनल लॉ) के अनुसार पालन करने की छूट है और दूसरी ओर संवैधानिक अधिकार भी बहुसंख्यकों के बराबर ही मिले हुए है। फिर भी विभिन्न राष्ट्रीय योजनाओं और नीतियों जैसे परिवार नियोजन, पल्स पोलियो, राष्ट्रगान, वन्देमातरम् आदि पर विशेष सम्प्रदाय का विपरीत व्यवहार किसी से छुपा नहीं है। परंतु पर्सनल लॉ के अन्तर्गत उत्तराधिकार, विवाह, तलाक आदि में मुस्लिम महिलाओं का उत्पीड़न अमानवीय अत्याचार कहें तो गलत नहीं होगा।

यह कैसी मुस्लिम धार्मिक कुप्रथा है जिसमे तीन बार तलाक की अभिव्यक्ति के अनेक रुपो में से किसी भी एक प्रकार से एक पुरुष अपनी पत्नी को तलाक दे देता है। परंतु उस पीड़ित मुस्लिम महिला जिससे निकाह के समय तीन बार कुबूल है–कुबूल है –कुबूल है कहलवाया जाता है, उसकी तलाक में कोई सहमति नहीं ली जाती तो क्या यह एकपक्षीय अन्याय नहीं हुआ? किसी भूल सुधार व पश्चाताप की स्थिति में (तलाक होने के बाद) पुनः अपने पूर्व पति से निकाह के लिए हलाला जैसी व्यवस्था व्यभिचार को बढ़ावा देकर मानवीय संवेदनाओं का शोषण व चारित्रिक पतन की पराकाष्ठा ही है। अनेक बार हलाला की अत्यंत निंदनीय, व महिला का मानसिक व शारीरिक उत्पीड़न करने वाली रस्में पूरी करने के बाद भी पूर्व पति अपनी तलाकशुदा पत्नी को पुनः स्वीकार नही करके जलालत की सारी सीमायें लांघ देता है। इस प्रकार सदियों से मुस्लिम महिलाओं को आत्मग्लानि भरा का जीवन जीने को विवश होना पड़ता है। मुस्लिम पुरुषों की ऐसी अधिनायकवादी सोच के कारण सामान्यतः पीड़ित मुस्लिम महिलायें मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड को मुस्लिम मर्द पर्सनल लॉ बोर्ड कहती है। अधिकाँश कट्टरपंथी व सेक्युलर कहते है कि सरकार को धार्मिक मामलो में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। परंतु सरकार का अपने नागरिको को ऐसे अमानवीय अत्याचारों से बचाने का संवैधानिक दायित्व तो है।

आज के वैज्ञानिक युग में जब आधुनिक समाज चारों ओर अपनी अपनी प्रतिभाओं के अनुसार निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है तो उस परिस्थिति में तलाक, हलाला व बहुविवाह जैसी अमानवीय कुरीतियों को प्रतिबंधित करना ही होगा। तभी मुस्लिम महिलाओं को व्याभिचार की गंदगी से बचा कर उनके साथ न्याय हो सकेगा और वे एक सामान्य जीवन सम्मान से जी सकेगी? इसके विरुद्ध उच्चतम न्यायालय में एक पीड़ित मुस्लिम महिला शायरा बानो का विवाद विचाराधीन है। आजकल जहां प्रिंट मीडिया में नित्य बड़े बड़े लेख छप रहें है वही टीवी न्यूज चौनलो पर भी तीन तलाक पर बड़ी बड़ी बहसें चल रही है।

परंतु तीन तलाक के साथ ही **समान नागरिक संहिता** का विरोध करने वाले कट्टरपंथी मुल्लाओं को इन धार्मिक कूरीतियों के प्रति कोई आक्रोश नहीं आता? अगर उनकी धार्मिक पुस्तकों में ऐसी व्यवस्था है तो उसमें संशोधन करके उन्हें अपने समाज को इससे बाहर निकालना चाहिये। **समान नागरिक संहिता** से इस कुप्रथा का कोई संबंध नहीं फिर भी मुल्लाओं ने मुस्लिम समाज में इसका एक ऐसा भय बना रखा है मानो की भविष्य में उनके शवों को भी दफनाने की प्रथा के स्थान पर कही जलाने की व्यवस्था न हो जाय? इस प्रकार के अज्ञानता से भरे रुढ़ीवादी समाज को अपना विकास और सबका साथ तो चाहिए परंतु उसको ठोस आधार देने वाली **समान नागरिक संहिता** स्वीकार नहीं, क्यों? यह कहां तक उचित है कि राष्ट्र में सुधारात्मक नीतियों का विरोध केवल इसलिए किया जाय कि कट्टरपंथी मुल्लाओं की आक्रमकता बनी रहें और अमानवीय अत्याचार होते रहें? जबकि मुस्लिमों को देश में ढोंगी धर्मनिरपेक्षता के बल पर अनेक लाभकारी योजनाओं से मालामाल किया जाता आ रहा है। फिर भी वे अपनी दकियानूसी धार्मिक मान्यताओं से कोई समझौता तो दूर उसमें कोई दखल भी सहन नहीं करना चाहते। अनेक प्रकार से अल्पसंख्यकों को निरंतर पोषित करने की नीतियों के लिए सरकार पर दबाव बनाये रखने की मुस्लिम मानसिकता में कभी कोई परिवर्तन होगा? क्या यह आक्रामकता उनकी भारत को दारुल–इस्लाम बनाने की वर्षो पुरानी घिनौनी महत्वाकांक्षा की ओर एक संकेत तो नहीं? कुछ मुल्लाओं और मौलवियों ने तलाक, हलाला व बहुविवाह आदि में संशोधन व सुधार की चर्चाओं में ऐसा होने पर देश में गृह युद्ध जैसी स्थिति होने की चेतावनी भी दी है। क्या ऐसी धमकी देना राष्ट्रद्रोह नहीं?

यहां एक और विचारणीय बिंदु यह भी है कि मुस्लिम समुदाय ने अपराधों पर अपने धार्मिक कानून शरिया को अलग करके भारतीय दंड संहिता को ही अपनाना उचित समझा है। क्योंकि शरिया में अपराधों की सजा का प्रावधान अत्यधिक कष्टकारी है। फिर भी **समान नागरिक संहिता** का विरोध करना इन कट्टरपंथियों का जिहादी जनून है।

समान नागरिक संहिता ऐसी होनी चाहिये जिसका मुख्य आधार केवल भारतीय नागरिक होना चाहिये और कोई भी व्यक्ति किसी भी धर्म, जाति व सम्प्रदाय का हो सभी को सहज स्वीकार हो। जबकी विडम्बना यह है कि एक समान कानून की मांग को साम्प्रदायिकता का चोला पहना कर हिन्दू कानूनों को अल्पसंख्यकों पर थोपने के रुप में प्रस्तुत किया जाने का कुप्रचार किया जा रहा है। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि १९४७ में हुए धर्माधारित विभाजन के पश्चात भी हम आज लगभग ७० वर्ष बाद भी उस विभाजनकारी व समाजघाती सोच को समाप्त न कर सकें बल्कि उन समस्त कारणों को अल्पसंख्यकवाद के मोह में फंस कर प्रोत्साहित ही करते आ रहे है। हमारे मौलिक व संवैधानिक अधिकारो व साथ में पर्सनल लॉ की मान्यताए कई बार विषम

शेष पृष्ठ 11 पर

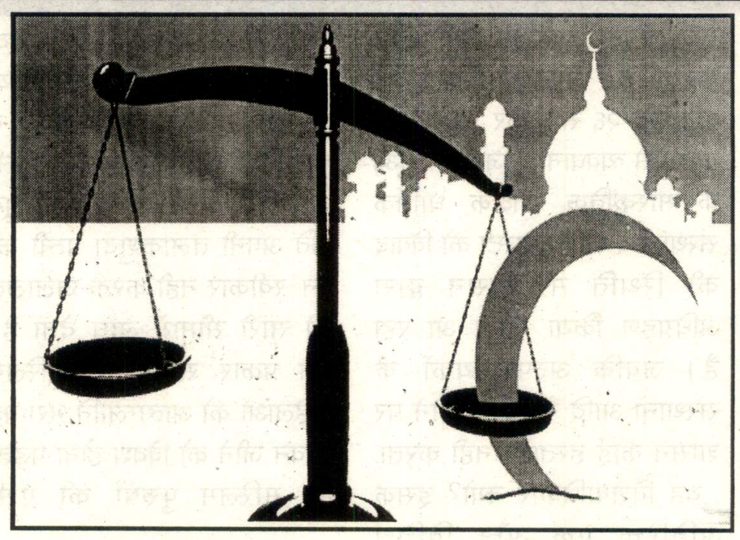

मुस्लिम शरीयत में परिवर्तन : विचार, वास्तविकता एवं संभावनायें

✍ तस्लीमा नसरीन

(पिछले अंक का शेष)

कुरान के दृष्टिकोण में परिवर्तनः कुछ नई व्याख्यायें

कुरान की मुसलमानों में तत्कालीन स्थिति पर अफसोस प्रकट करते हुए मौलाना सैयद अबुलआला मौदूदी लिखते हैं– ''अब उनके (मुसलमानों के) पास इसका (कुरान का) इस्तेमाल सिवाय इसके और कुछ नहीं रहा कि घर में कुरान को रखकर भूत–प्रेत आदि भगायें, इसकी आयतों को (ताबीज बनाकर) गले में बाँधें और घोल कर (रोग दूर करने) पीयें और केवल सबाव के लिए बेसमझ–बूझे उसे पढ़ लिया करें। अब ये (मुसलमान) इससे अपनी जीवन के मामलों में हिदायत नहीं माँगते।''७

इसका स्पष्ट कारण है, कुरान के अनेक नियमों का तत्कालीन समय एवं परिस्थितियों में नितान्त अप्रासंगिक एवं कालदोष से ग्रसित हो जाना।। इसने दुनिया के मुसलमानों के सामने एक के बाद एक समस्याएँ खड़ी कर दी हैं। आज विश्व में मुसलमानों की दुखद स्थितियों का कारण स्वयं मुसलमान नहीं हैं, वरन् इस्लाम है। ऐसी ही स्थिति शायद १२वीं शताब्दी में कुरान को लेकर प्रसिद्ध विद्वान एवं संत जलालुद्दीन रूमी के सामने आई, जिसने लिखा–

मंजे कुरान मग्जे रा
बरदुस्तम,
उस्तुखन पेशे सगन
अन्दकतम।

अर्थ– ''कुरान से 'मैंने' मज्जा चूस ली और हड्डियाँ कुत्तों के आगे फैंक दीं।''

ऐसा विचार इतनी खुली भाषा में सुनना किसी भी धर्मपरायण मुसलमान के लिए स्तब्धकारी है परन्तु उस ईरानी दार्शनिक को जो कहना था वह कह दिया। उसने मज्जा रूपी दर्शन को तो कुरान से चूस लिया और यह दूसरे के सोचने को छोड़ दिया कि जो 'हड्डियाँ कुत्तों के आगे फैंक दीं' वे हड्डियाँ क्या थीं? वे कुत्ते कौन हैं? संकेत स्पष्ट है कि भविष्य में कुरान की सूखी हड्डियों जैसी निरर्थकऔर सारहीन आयतों को लेकर बुद्धिहीन मुसलमान आपस में बुरी तरह लड़ते–झगड़ते और एक–दूसरे को मारते रहेंगे।

अनेक इस्लामी संगठनों ने, जिनमें 'जमाइते इस्लामी' प्रमुख है, बड़ी मात्रा में मुस्लिम धार्मिक विषयों पर हिन्दी में साहित्य छापना प्रारम्भ किया है। ''आपकी अमानतः आपकी सेवा में'' नामक एक पुस्तिका का विषय यह है कि वास्तव में कुरान हिन्दुओं की अमानत है जिसे मुसलमानों ने अपने पास सुरक्षित रखा है तथा अब उसे हिन्दुओं को सौंप रहे हैं।८ दूसरी बात जो जोर देकर कही जा रही है, वह यह कि कुरान केवल मुसलमानों के लिए ही नहीं है वरन् सबके लिए है। यह दोनों बातें कुरान की मूल मान्यताओं के विरूद्ध हैं तथा कुफ्र की श्रेणी में आती हैं। सैयद अबुल आला मौदूदी कहते हैं – ''...मुसलमानों का यह धार्मिक तथा नैतिक कर्तव्य है कि वे.... कुरान प्रज्ञा का मार्ग गैर–मुस्लिम भाइयों के लिए प्रशस्त करें।''६

शरीयत की एक पाकिस्तानी व्याख्या

एक फतवा जो पाकिस्तान से आया है, उसके अनुसार **''यदि कोई मुसलमान जल कर मर जाता है तो वह जन्नत में नहीं जा सकता। वह कयामत के दिन की तुरही सुनकर जिन्दा उठ खड़ा नहीं हो सकेगा और वहीं पड़ा रहेगा क्योंकि आग में जलना वास्तव में दोजख ही होता है। यदि वह पृथ्वी पर ही आग में जल गया तो समझ लो कि उसे दोजख यहीं प्राप्त हो गया।''** यह फतवा पाकिस्तान से आया है। इस फतवे का ही परिणाम था कि १६७१ के भारत–पाक युद्ध में बड़ी संख्या में 'पाकिस्तानी टैंकों'को छोड़–छोड़ कर कूद कर भाग गये और बड़ी संख्या में पाकिस्तानी टैंक सही–सलामत रूप में भारतीय सेना द्वारा पकड़ लिये गये। टैंक युद्ध में टैंक में आग लग जाने पर सैनिकों के अन्दर जल कर मरने का खतरा अधिक होता है। पाक सैनिकों में फतवे का इतना डर बैठ गया कि यदि वे जलकर मर गये तो जन्नत से हाथ धो बैठेंगे इसलिए उन्होंने समय से पूर्व ही बुद्धिमानी दिखाई तथा टैंकों को छोड़कर भाग गये। जलते टैंकों को बचाने का तो उन्होंने कभी प्रयास ही नहीं किया। यही स्थिति कुछ–कुछ हवाई जहाजों के सम्बन्ध में भी दिखाई देती है। मुस्लिम पायलट अन्तिम क्षणों तक हवाई जहाज को बचाने का प्रयास नहीं करते और कूद जाते हैं। इस फतवे ने गैर–मुस्लिमों को एक नई दिशा दे दी है तथा साम्प्रदायिक दंगों के समय वे बदले की भावना से मुसलमानों को जला देते हैं कि वे जन्नत में न जा सकें। यही नहीं मुसलमानों की कब्रें खोदकर हड्डियों को जला देना भी प्रारम्भ हो गया है, क्योंकि ऐसी स्थिति में भी फतवे के अनुसार किसी नमाजी को जन्नत नहीं मिलेगी। इस फतवे ने मुसलमानों पर एक प्रश्न–चिन्ह लगा दिया है कि मुसलमानों को सैनिक या नागरिक विमानों को पायलट बनाया जाये या नहीं! और टैंकों पर मुस्लिम सैनिक तैनात किये जायें या नहीं! इस तरह जिहाद भी सिर्फ वहीं और उन्हीं स्थितियों में किया जा सकेगा, जहाँ जल कर मर जाने का खतरा नहीं है।

अब यह भविष्य में वाद–विवाद का प्रश्न बना रहेगा कि उपर्युक्त पाकिस्तानी फतवा शरीयत के अनुकूल है या नहीं, या शरीयत के दृष्टिकोण से इसे कैसे देखा जाये? व्यवहार में तो यह आ ही गया। शाह इस्माइल शाहिद ने ३३ ऐसे कार्यों की सूची दी है, जो शरीयत के विरूद्ध हैं परन्तु मुसलमान करते हैं। इनमें अस्पृश्यता का मानना भी एक है।१० यह शरीयत में अपने आप में ही परिवर्तन किया जाना है।

काफिर एवं जिहाद की पुनर्व्याख्या आवश्यक

आज की स्थिति में कुरान यह बताने में असमर्थ है कि 'काफिर' और 'जिहाद' का अर्थ क्या है? किन स्थितियों में 'जिहाद' को लागू किया जा सकता है और कौन इसका आदेश दे सकता है? क्या 'काफिर' और 'जिहाद' को उन्हीं अर्थों में लें जैसा कि कुरान में बताया गया है कि काफिरों को खत्म करने के लिए मुसलमान हमेशा तलवार बाहर निकाल लें, उनसे जजिया वसूल करें, जब चाहें उन्हें लूट लें, उनके स्त्री–बच्चों को लूट लें या मार डालें। प्रत्येक गैर–इस्लामी देश (दारूल हरब) को इस्लामी देश (दारूल इस्लाम) बनाने के लिए हमेशा युद्ध के रूप में 'जिहाद' छेड़े रहें। मुसलमान किसी देश में बैठकर, घर बनाकर न खेती करें और न व्यापार, सिर्फ काफिरों की लूट उनके जीवन यापन का तरीका हो। क्या किसी भी मुस्लिम सैनिक को यह अधिकार है कि उसे यदि कोई भी गैर–मुस्लिम स्त्री पसन्द आ जाए तो उसे उठा ले? क्या कुरान किसी गैर–मुस्लिम सैनिक को एक मुसलमान स्त्री के साथ भी ऐसा व्यवहार करने की आज्ञा देती है?

इसके जो परिणाम सामने आ रहे हैं उनमें से एक का ऊपर वर्णन किया जा चुका है। १६४० मुस्लिम युवक प्रतिदिन विश्व में ऐसी उग्रवादी घटनाओं में मारे जाते हैं। प्रतिकार के रूप में बोस्निया में सर्ब राष्ट्रवादियों ने १६६४ ई. में ३०,००० मुस्लिम स्त्रियों को लूट लिया और कुरान की वह आयत लिखकर कैम्प के बाहर टाँग दी, जिसमें मुसलमानों को यह आज्ञा दी गई है कि ये किसी भी काफिर स्त्री को उठा सकते हैं। आज तक मुसलमान कुछ नहीं कर सके।'' **इस बात को स्वीकार नहीं किया जा सकता है कि किसी भी देश में मुसलमान न उस देश की संस्कृति को मानें और न कानून को। हर बात को शरीयत का मामला बना डालें और सदा के लिए यह जिहाद का स्थायी कारण या आधार बना रहे।**

जिहाद की एक और व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है, वह यह है कि किसी गैर–इस्लामी देश के इस्लामी देश से युद्ध छिड़ जाने की दशा में गैर–इस्लामी देश में मुस्लिम नागरिक इस्लामी देश की सेनाओं का साथ दें अर्थात देशद्रोह करें, वे शत्रु की मदद करें, विश्वासघात करें, विद्रोह करें, भीतरघात करें, अस्थिरता फैलायें, शत्रु के लिए जासूसी करें और कठमुल्लों ने इसे 'कुर्बानी' का दर्जा दिया है। चूँकि ऐसी व्याख्या का किसी भी मुस्लिम धर्माचार्य ने विरोध नहीं किया है, तो क्या हम मान लें कि यह व्याख्या सही है? इसके जितने दुष्परिणाम सामने आये हैं और आएँगे; उनकी कल्पना नहीं की जा सकती। जिहाद की ऐसी व्याख्याओं ने आमे व्यक्ति की निगाह में इस्लाम और मुसलमान को संदेहास्पद, असहिष्णु एवं देशद्रोही की श्रेणी में ले जाकर खड़ा कर दिया है। इकबाल ने 'शिकवा' में मुसलमानों की दुर्दशा के लिए जो आँसू बहाए, उसका एक बड़ा कारण जिहाद की ऐसी व्याख्यायें ही हैं।

स्पेन में रानी ईसाबेला द्वारा १४६४ ई. में ७५० वर्ष पुराने इस्लामी राज्य को समाप्त करके ईसाई राज्य स्थापित किए जाने पर, आम मुसलमान देशद्रोही के वर्ग में ही बना रहा। बगदाद और मिश्र के खलीफा स्पेन पर हमला करने की सोच रहे थे और ऐसे में स्पेन में मुसलमानों को फतवों के द्वारा जिहाद के लिए उकसाया जा रहा था कि वे देशद्रोह करें तथा इस्लामी सेनाओं का साथ दें। परिणाम यह निकला कि रानी ईसाबेला ने १४६८ से १५०४ ई. तक या तो

शेष पृष्ठ 11 पर

अरविन्द केजरीवाल जैसा मुख्यमंत्री पालना कितना मुश्किल है

✍ डॉ० कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

अरविन्द केजरीवाल दिल्ली के मुख्यमंत्री हैं। इसके साथ साथ वे आम आदमी पार्टी के अध्यक्ष भी हैं। राजनैतिक दल एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगाते रहते हैं। इन आरोपों के दो वर्ग हैं। पहले वर्ग में वे आरोप आते हैं जो किसी भी राजनैतिक दल की नीतियों और उसकी विचारधारा को लेकर लगते हों। मसलन भारतीय जनता पार्टी कहती है कि सोनिया गांधी कांग्रेस पार्टी की अध्यक्षा हैं और उनकी पार्टी की सरकार जो नीतियाँ लागू कर रही हैं उससे देश रसातल में चला जाएगा। इस प्रकार के आरोपों का फैसला देश की जनता चुनावों में कर देती है। लेकिन आरोपों का दूसरा वर्ग व्यक्तिगत आरोपों की श्रेणी में आता है। जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति पर उसकी ईमानदारी को लेकर आरोप लगाता है, या फिर वह कहता है कि अमुक व्यक्ति ने अमुक प्रकल्प में इतने लाख का घोटाला कर लिया है, तो ये व्यक्तिगत आरोप होते हैं। राजनैतिक दलों के व्यक्ति इस प्रकार के व्यक्तिगत आरोप भी एक दूसरे पर लगाते रहते हैं। लेकिन सामान्य नैतिकता का तकाजा है कि इस प्रकार के आरोप लगाने से पहले इस बात की जाँच कर लेनी चाहिए कि आरोप सही हों और उसके पुख्ता सबूत उपलब्ध हों। अरविन्द केजरीवाल का स्वभाव है कि वे सभी पर इस प्रकार के व्यक्तिगत आरोप लगाते रहते हैं। कुछ लोग चुपचाप उनकी गालियाँ सुन लेते हैं लेकिन जो ज्यादा संवेदनशील होते हैं वे इस अपमान को सह नहीं पाते। केन्द्रीय मंत्री अरुण जेटली के साथ भी यही हुआ। केजरीवाल ने उन पर दिल्ली क्रिकेट एसोसिएशन के मामलों में आर्थिक भ्रष्टाचार का आरोप लगाया। जेटली ने इन आरोपों को नकारा। उन्होंने कहा कि इन झूठे आरोपों की बजह से उनकी साख और छवि को धक्का लगा है। उनके सम्मान को ठेस पहुँची है। अपने इस अपमान के हर्जाने के रूप में उन्होंने दिल्ली उच्च न्यायालय में केजरीवाल पर दिसम्बर २०१५ में दस करोड़ का मानहानि का दावा ठोंक दिया।

स्वभाविक है कि केजरीवाल अपने बचाव में कोई वकील खड़ा करते। जिस प्रकार केजरीवाल की बिना प्रमाण के आरोप लगाने की आदत है, उसी प्रकार राम जेठामलानी को भी विवादों से जुड़े मुकद्दमे लड़ने की आदत है। इन्दिरा गांधी हत्याकांड से जुड़ा मुकद्दमा भी राम जेठामलानी के कारण अभी तक याद किया जाता है। जेठामलानी द्वारा लड़े गए इस प्रकार के मुकद्दमों की फेहरिस्त लम्बी है। जाहिर है जेठामलानी से अच्छा वकील केजरीवाल को भला और कहाँ से मिल सकता था? इस प्रकार जेठामलानी केजरीवाल के भी वकील हो गए।

INDIA'S HITLER

जेठामलानी ने कचहरी में जेटली से लम्बी बहस की। लेकिन उनका ज्यादा जोर यह जानने में लगा रहा कि जेटली अपनी इज्जत की कीमत किस आधार पर आंक रहे हैं। वैसे यदि अरविन्द केजरीवाल के खिलाफ उस तथाकथित घोटाले का कोई सबूत होता तो शायद उन्हें न तो इतनी लंम्बी कवायद करनी पड़ती और न ही जेठामलानी जैसा वकील करना पडता। लेकिन अब केजरीवाल के पास और कोई रास्ता बचा ही नहीं था। अब तो उन्हें किसी तरह से यह सिद्ध करना था कि अब्बल तो इन आरोपों से जेटली का अपमान हुआ ही नहीं, यदि हुआ भी है तो उसकी कीमत दस करोड़ तो नहीं हो सकती। इस मोड़ पर अनेक राजनीतिज्ञों को जेठामलानी की जरुरत पड़ती है।

लेकिन इस रुचिकर मुकद्दमे का एक दूसरा पहलू भी है। जैसे जैसे केस आगे बढ़ता जा रहा है, वैसे वैसे राम जेठामलानी की फीस का बिल बढ़ता जा रहा है। अब तक वह तीन करोड़ बयालीस लाख रुपए हो गया है। परन्तु अरविन्द केजरीवाल ने अभी तक उसकी अदायगी नहीं की। यदि साथ साथ अदायगी करते रहते तो शायद यह मामला तूल न पकड़ता। क्योंकि फीस का मामला वकील और मुवक्किल का आपसी मामला है। इसमें किसी तीसरे की कोई रुचि नहीं होती। जब कोई व्यक्ति वकील करता है तो उसकी फीस को ध्यान में रख कर ही करता होगा। फिर आखिर केजरीवाल ने राम जेठामलानी को उनकी फीस समय रहते क्यों अदा नहीं की?

इसी में सारा रहस्य छिपा हुआ है। केजरीवाल चाहते थे कि उनके मुकद्दमे की यह फीस दिल्ली सरकार अदा करे। तर्क बिल्कुल सीधा है, जिसे केजरीवाल के मित्र मनीष सिसोदिया पूरा जोर लगा कर सभी को समझा रहे हैं। उनका कहना है कि अरविन्द केजरीवाल क्योंकि दिल्ली के मुख्यमंत्री बन चुके हैं, इसलिए उन पर जो भी मुकद्दमा बगैरह दर्ज होगा और उस मुकद्दमे को लड़ने में उनका जितना खर्चा आएगा, वह सारा दिल्ली सरकार को ही करना होगा। पंजाबी में कहा जाए तो पंगा केजरीवाल लें और भुगते दिल्ली की सरकार। सिसोदिया ने तो दिल्ली सरकार के बाबुओं को हुक्म जारी कर दिया था कि राम जेठामलानी को सरकारी खजाने से तीन करोड़ बयालीस लाख की राशि दे दी जाए। लेकिन बाबू लोग थोड़ा चौकन्ने थे। उनका कहना था कि सरकारी खजाने से अदायगी सरकारी मुकद्दमों के लिए की जा सकती है, केजरीवाल के व्यक्तिगत घरेलू मामलों में हो रहे खर्च का भुगतान भला सरकार कैसे कर सकती है? अत दिल्ली सरकार का विधि विभाग इस मामले में लेफ्टीनेंट गवर्नर से अनुमति लेने पर बजिद है। उधर मनीष अडे हुए हैं कि अरविन्द केजरीवाल का सारा खर्चा अब सरकार को ही उठाना पड़ेगा। मामला केवल केजरीवाल का ही नहीं है। दस करोड़ की मानहानि का मुकद्दमा केजरीवाल, आशुतोष, राघव चड्ढा, संजय सिंह, कुमार विश्वास और दीपक वाजपेयी पर संयुक्त रुप से है। यदि मनीष सिसोदिया के इस तर्क को मान भी लिया जाए कि केजरीवाल के मुख्यमंत्री बन जाने के बाद उनका सारा भार उठाना दिल्ली की जनता की कानूनी जिम्मेदारी बन जाती है तो भी उनके साथ की यह जो फौज इस मुकद्दमे में फँसी हुई है, इसका खर्च भला दिल्ली सरकार कैसे उठा सकती है? इनका तो दिल्ली सरकार से कुछ लेना देना नहीं है। जेठामलानी की फीस के बिल में एक और फंडा है। मुकद्दमा २०१६ में शुरु हुआ था। एक साल में ही जेठामलानी का बिल पौने चार करोड़ तक पहुँच गया है। मुकद्दमे के अंत तक हो सकता है बिल, अरुण जेतली द्वारा माँगे गए दस करोड़ के हर्जाने से भी ज्यादा हो जाए। दिल्ली की जनता के लिए अरविन्द केजरीवाल जैसा मुख्यमंत्री पालना मुश्किल होता जा रहा है।

मामले को तूल पकड़ता देख कर राम जेठामलानी को खुद मैदान में उतरना पडा। उन्होंने कहा यदि अरविन्द केजरीवाल या दिल्ली सरकार उनकी फीस का भुगतान नहीं कर पाती तो भी वे केजरीवाल का मुकद्दमा छोड़ेंगे नहीं। वे इसे हर हालत में लड़ेंगे। वे अपने गरीब मुवक्किलों के मुकद्दमे मुफ्त में ही लड़ते हैं। वे केजरीवाल के मुकद्दमे को भी इसी वर्ग का मान कर मुफ्त केस लड़ेंगे। जेठामलानी तो जाने माने वकील हैं। कानून की रग रग से वाकिफ हैं। वे इतना तो जानते ही होंगे कि केजरीवाल का जो मुकद्दमा वे लड़ रहे हैं, वह व्यक्तिगत मुकद्दमे की श्रेणी में आता है या सरकारी श्रेणी में? मुकद्दमा दिल्ली के मुख्यमंत्री शेष पृष्ठ 11 पर

भारत के शिव मंदिर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल, प्रधानमंत्री मोदी ने किया था उद्घाटन

१४७ फुट लंबी है शिव की प्रतिमा : ईशा योग फाउंडेशन द्वारा तमिलनाडु के कोयंबटूर में आदियोगी शिव की ११२ फुट की आवक्ष प्रतिमा को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने दुनिया की सबसे बड़ी आवक्ष प्रतिमा के रूप में दर्ज किया है। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड ने अपनी वेबसाइट पर इसकी घोषणा की है। पीएम मोदी ने २४ फरवरी को ईशा योग फ़ाउंडेशन की शिव प्रतिमा का उद्घाटन किया था। भगवान शिव की यह प्रतिमा ११२.४ फीट उंची, २४.६६ मीटर चौड़ी और १४७ फुट लंबी है।

५०० टन है प्रतिमा का वजन : यह प्रतिमा मुक्ति का प्रतीक है। यह उन ११२ मार्गो को दर्शाता है जिनसे इंसान योग विज्ञान के जरिए अपनी परम प्रवृति को प्राप्त कर सकता है। भगवान शिव के चेहरे के डिजाइन को तैयार करने में ढाई साल लगे। ईशा फाउंडेशन की टीम ने इसे ८ महीने में पूरा किया। इस प्रतिमा को स्टील से बनाया गया है। धातु के टुकड़ों को जोड़कर इसे तैयार किया गया है। भगवान शिव प्रतिमा का वजन ५०० टन है।

भगवान शिव के नंदी है विशेष रुप : शिव की सवारी नंदी बैल को भी बड़े खास तरीके से तैयार किया गया है। धातु के ६ से ९ इंच बड़े टुकड़ों को जोड़कर नंदी का ऊपरी हिस्सा तैयार किया गया है। इसके अंदर तिल के बीज, हल्दी, पवित्र भस्म, विभूति, कुछ खास तरह के तेल, थोड़ी रेत, कुछ अलग तरह की मिट्टी भरी गई है। प्रतिमा के अंदर २० टन सामग्री भरी गई है। फिर उसे सील कर दिया गया। कहा जाता है कि भगवान शिव की इस प्रतिमा को देखने के लिए हर रोज हजारों श्रद्धालु यहां आते हैं। रात में जब नीली रौशनी में यह प्रतिमा नहाती है तो इसकी खूबसूरती में चार चांद लग जाते हैं। **ललित मैनी**

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,

श्री नरेन्द्र मोदी जी,
माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार।
साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली-११००११

विषय : पाकिस्तान द्वारा पूर्व भारतीय नौसेना अधिकारी श्री कुलभूषण जाधव को दी गई फांसी की सजा से मुक्ति दिलाने की मांग।

महोदय,

आपको ज्ञात है कि पाकिस्तान आतंकवाद की फैक्ट्री तथा निर्यातक है। भारत सहित पूरी दुनिया में आतंकियों की आपूर्ति करने वाला सबसे प्रमुख देश है। भारत के विरूद्ध तो हमेशा ही षड्यंत्र रचते रहता है। भारत के आरोपों को कमजोर करने के उदेश्य से भारत को बदनाम करने का प्रयास करते रहता है। भारत को बदनाम करने के उदेश्य से ही उसने भारतीय नौसेना के पूर्व अधिकारी श्री कुलभूषण जाधव का अपहरण कराया तथा अब पाकिस्तानी सैन्य अदालत ने उन्हें फांसी की सजा देने की घोषणा की हैं। अखिल भारत हिन्दू महासभा पाकिस्तान के इस घटिया हरकत का तीव्र विरोध करती हैं।

आपसे मांग है कि श्री कुलभूषण जाधव की फांसी का पाकिस्तान से तीव्र विरोध करें, श्री जाधव को फांसी से बचायें तथा पाकिस्तान को इस कायराना तथा भारत विरोधी हरकतों का करारा जवाब दें। यदि पाकिस्तान फांसी की सजा पर रोक नहीं लगाये तो पाकिस्तान से सभी प्रकार का कूटनीतिक संबंध समाप्त करें।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)	(मुन्ना कुमार शर्मा)	(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

प्रति ठा में,

श्री नरेन्द्र मोदी जी,
माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार।
साउथ ब्ल क, नई दिल्ली-११००११

विषय :- बच्चों पर अंग्रेजी लादना ऐसा ही है जैसे हिरणों पर घास लादना

महोदय,

"अब हिरणों पर लदेगी घास" शीर्षक से प्रकाशित लेख में विद्वान लेखक डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने उल्लेख किया है कि–

१. मोदी ने १२ सचिवों की एक समिति बनाई, यह तय करने के लिए कि देश के करोड़ों बच्चों की शिक्षा का माध्यम क्या हो और उन्हें कौन–सी भाषा पढाई जाए । इस निर्णय पर डॉ. वैदिक ने चेतावनी दी है कि हमारे सरकारी अफसर नरेंद्र मोदी सरकार का बेड़ा गर्क करने पर उतारू हैं, क्योंकि इन १२ रत्नों (सचिवों) के अनुसार छठी कक्षा से आगे तक सभी कक्षाओं में अंग्रेजी की पढाई अनिवार्य होनी चाहिए और देश के ६,६१२ खण्डों (ब्लॉकों) में सरकार को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की स्थापना करनी चाहिए ।

२. डॉ. वैदिक का यह तर्कयुक्त सुझाव है कि शिक्षा में भाषा नीति बनाने के लिए अफसरों के बजाय शिक्षाविदों और भाषाविदों की समिति बनाई जानी चाहिए।

डॉ. वैदिक के ये विचार सुचिंतित हैं और दुनियाँ के प्रगत देशों के भाषायी अनुभवों के आधार पर हैं ।

डॉ. वैदिक का यह कथन सही है कि देश में हर साल करोड़ों बच्चे अंग्रेजी की जबर्दस्त पढ़ाई के कारण स्कूल छोड़ देते हैं और सबसे ज्यादा बच्चे अंग्रेजी में फेल होते हैं, अंग्रेजी रटने के कारण अन्य विषयों की उपेक्षा होती है और छात्रों की मौलिकता नष्ट होती है, वे नकलची बन जाते हैं, स्वभाषा और स्वदेश प्रेम में गिरावट आती है ।

हमारे देश के बिहार राज्य में मोटरसाइकिलों, साइकिलों और तिपहियों पर भैंसें ढोई गई होने की सूचनाएँ जगजाहिर हैं और ऐसे भ्रष्ट नेता बाहर घूम रहे हैं, इसी प्रकार का हिरणों पर घास लादने का उदाहरण डॉ० वैदिक ने बच्चों पर अंग्रेजी लादने के प्रसंग में प्रस्तुत किया है।

प्रधानमंत्री जी और मानव संसाधन विकास मंत्रालय अंग्रेजी पढ़ाने की अनिवार्यता न करें, बल्कि इसे वैकल्पिक रखें। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रपति जी का ४ नवंबर, 1991 के संकल्प संख्या १३०१५/१/६१–रा० भा० (घ) के बिंदु संख्या २२ (ग) के अनुसार देश में सभी जगह विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में विभिन्न विषयों की पढाई हिन्दी में भी करने के लिए उपयुक्त व्यवस्था उपलब्ध कराने का आदेश है, जिसे अब २५ वर्ष हो गए हैं। यह स्वाभाविक है कि अंग्रेजी भाषा को अनिवार्यतः थोपने से राष्ट्रपति जी के और भारत सरकार के अब तक के संघ की राजभाषा हिन्दी को लागू करने के आदेश निरर्थक हो जाएँगे। यह भी कहना आवश्यक है कि इन आदेशों के पालन हेतु कोई उल्लेखनीय ठोस कार्रवाई नहीं हुई दिखाई पडती है। इन्हीं आदेशों के बिंदु २२ (छ) में भी हिन्दी माध्यम से कृषि, इंजीनियरी और आयुर्विज्ञान की पढ़ाई की व्यवस्था के आदेश दिए गए हैं। विश्वास है कि अविलंब वांछित आदेश देने की कृपा करेंगे।

तलाकशुदा मुस्लिम महिलाओं ने किया हवन

अखिल भारत हिंदू महासभा के कार्यालय पहुंचकर लिया तीन तलाक के खिलाफ आवाज बुलंद करने का संकल्प

तलाक से मुक्ति का संकल्प

आज अलीगढ़

हलाला के नाम पर होता है मुस्लिम महिलाओं का यौन शोषण

हिंदू महासभा के हवन यज्ञ में आईं मुस्लिम महिलाएं ☐ अपने अधिकार के लिए लड़ाई में लेंगी हिन्दू महासभा का साथ

अपनी रातें रंगीन कर रहे हैं मौलाना:पूजा नंदगिरी

हिम्मत है तो तीन तलाक से बचाएं

अलीगढ़

हिन्दू महासभा के यज्ञ में शामिल टप्पल की सलमा और आगरा की फाइजा ने तलाक और हलाला के खिलाफ उठाई आवाज

मुस्लिम महिलाओं ने उठाया तीन तलाक का मुद्दा

शेष पृष्ठ 6 का धर्मान्तरण को अपना अधिकार........

सेकुलर देश के रहने वाले हैं। यह बात आप ८२ प्रतिशत बहुसख्यंकों के गले नहीं उतार सकते हैं। हमारे अंग्रेजी मीडिया का एक बड़ा वर्ग वयोवद्ध स्वामी लक्ष्मणानन्द या उनके शिष्यों की नृशंस हत्या पर मौन ही नहीं रखे था बल्कि उसे तर्क सम्मत सिद्ध करने के लिए दिवगंत संत पर आक्षेप तक लगा चुका था कि वे नवदीक्षित ईसाईयों के हिन्दू आस्था में वापसी का समर्थन क्यों करते हैं। हम मानें या ना माने देश में सबकी प्रतिक्रिया जताने का अधिकार हैं पर जघन्य अपराधों की प्रतिक्रिया स्वरूप यदि बहुंसंख्यक वर्ग सक्रिय हो जाता है तब इस सिद्धान्त को नकारने में हमारा प्रेस क्यों अगुवाई करता हैं क्या किसी को विश्वास होगा कि मुम्बई के कई प्रख्यात अंग्रेजी दैनिक ने हाल में एक अग्रलेख में लिखा कि यदि सारा भारत ईसाई भी बन जाए तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता हैं तब तक हमें कानून का शासन या सवैंधानिक अधिकार उपलब्ध कराए जाते हैं। वही लेखक इसी वाक्य में 'ईसाई' की जगह 'हिन्दू शब्द प्रयुक्त करने का क्या साहस दिखा सकता है? प्रसिद्ध विधिवेत्ता फाली नरीमान ने हाल में एक प्रसिद्ध दैनिक में एक अग्रलेख जिसका शीर्षक था 'किसी के आध्यात्मिक अस्तित्व का मूल तत्व धर्मान्तरण हैं' लिखा कि ईसाई मिशनरी मतान्तरण द्वारा कोई अनुचित कार्य नहीं कर रहे हैं। प्रसिद्ध लेखक व पत्रकार करन थापर और वीर संघवी भी विदेशी चर्चो के एजेन्डे के समर्थक प्रतीत होते हैं। मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा में जिसकी दुहाई दी जा रही है बलात या प्रलोभन से धर्मान्तरण वर्जित हैं पर न जाने क्यों राष्ट्रद्रोही लॉबियाँ दुष्प्रचार के माध्यम से निजी निर्णय के अधिकार के बहाने ईसाई कट्टरवादियों का साथ दे रही हैं।

शेष पृष्ठ 5 का निर्जला एकादशी साधना......

धन, द्रव्य आदि का भी दान कर समाज को आत्म बल प्रदान करते हैं। प्राचीन काल में धर्मज्ञ राजा एवं सामर्थ्यवान लोग निर्जला एकादशी को जल एवं गौ दान करना सौभाग्य की बात मानते थे। इसीलिए जल में वास करने वाले भगवान श्रीमन्नारायण विष्णु की पूजा के उपरांत दान–पुण्य के कार्य कर समाज सेवा की जाती रही। आज भी अधिक नहीं तो थोड़ा ही सही श्रद्धालु लोग इस परंपरा का अपनी सामर्थ्य के अनुसार निर्वाह करते हैं।

शेष पृष्ठ 6 का आध्यात्मिक आंदोलन ही पूर्ण........

श्रेय भगवान ने महात्मा गाँधी को दिया। इन दोनों स्तरों से स्वतंत्रता आंदोलन को जो ब्रह्म एवं आंतरिक बल मिला, उससे भारत की विजय सुनिश्चित हो गई। यह स्थिति तय कर दी कि किसी भी अवस्था में पराजय परिणाम नहीं हो सकता, अंत में विजय अवश्यंभावी है और यही हुआ। पराजय की गहन बेड़ियों को तोड़कर भारत स्वतंत्र हुआ। विजयरथ को हांकने के लिए फिर से बदली परिस्थितियों में सूझ–बूझ की आवश्यकता पड़ी, परंतु दुर्भाग्य की बात थी कि स्वतंत्रता की प्रज्जवलित ज्वाला को थामने के लिए निस्स्वार्थ एवं तप, ज्ञान से परिपूरित आत्माओं का सर्वथा अभाव रहा और इसी अभाव के कारण देश की स्वतंत्रता के पश्चात देश को समग्र विकास की दिशा में ले जाने में सघन संघर्ष करना पड़ा, जो अभी तक जारी है। यह तभी संभव होगा, जब हम बुद्धि के साथ हृदय की भाषा सुनेंगे। अंतरज्ञान को पाए बिना प्रगति समग्र नहीं हो सकती। यह आध्यात्मिक आंदोलन से ही सफल हो सकती है।

शेष पृष्ठ 1 का

सुरक्षाबलों ने लिया सुकमा का....

प्रभावित इस जिले में नक्सलियों ने २४ अप्रैल को सीआरपीएफ के ७४ वीं बटालियन के दल पर घात लगाकर हमला कर दिया था। इस हमले में २५ जवान शहीद हो गए थे तथा सात अन्य घायल हुए थे। इस बड़े नक्सली हमले के बाद क्षेत्र में पुलिस दल ने हमलावर नक्सलियों की खोज शुरू कर दी है। अभी तक पुलिस ने इस मामले में १७ नक्सलियों को गिरफ्तार कर लिया है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र की राजग सरकार से मांग की है कि देश से नक्सलवाद का शीघ्र सफाया हो।

शेष पृष्ठ 9 का

अरविन्द केजरीवाल जैसा मुख्यमंत्री...

पर नहीं है बल्कि अरविन्द केजरीवाल पर है। उसका भुगतान सरकार को करना चाहिए या केजरीवाल को अपनी जेब से करना चाहिए। यदि वे इस पर भी रोशनी डाल देते तो शायद इससे उनके इस गरीब मुवक्किल की आँखें भी चौंधिया जातीं और आम जनता को भी ज्ञान हो जाता कि जेठामलानी सरकारी खजाने को लुटने से बचा गए।

यदि उनकी नजर में केजरीवाल गरीब मुवक्किल की श्रेणी में आते हैं तो उन्होंने उसे लगभग चार करोड़ रुपए का बिल भेजा ही क्यों था? जेठामलानी की नजर में मुकद्दमा लेते समय तो केजरीवाल अमीर थे और फीस देते समय अचानक गरीब हो गए हैं। इसलिए अब वे उनका मुकद्दमा मुफ्त लड़ेंगे। जेठामलानी की पारखी नजर को मानना पड़ेगा। सारे देश में उन्होंने मुफ्त मुकद्दमा लड़ने के लिए मुवक्किल भी ढूँढा तो वह अरविन्द केजरीवाल मिला। यानि जो पौने चार करोड़ वकील को न अदा कर सके वह बीपीएल की श्रेणी में आता है। बिलो पावर्टी लाईन। गरीबी रेखा के नीचे। वैसे हिन्दुस्तान के बाकी लोग भी जेठामलानी की गरीब की इस परिभाषा को सुन कर सोचते होंगे कि वे भी केजरीवाल जैसे गरीब होते तो कितना अच्छा होता।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये
द्विवार्षिक...300/- रुपये
आजीवन सदस्य..1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
"हिन्दू सभा वार्ता" के नाम भेजें।
पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001
नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 8 का

मुस्लिम शरीयत में.....

मुसलमानों को मार-मार कर ईसाई बना लिया या स्पेन से भाग जाने पर मजबूर किया। स्पेन में एक भी मुसलमान न छोड़ा। 'यह है जिहाद की व्याख्या और उसके परिणाम।' बहुत कुछ चीन ने चीनी तुर्किस्तान एवं रूस ने बाल्कन प्रदेशों में ऐसा ही किया। जिहाद ने मुसलमानों को दुनिया में कभी भी एक अच्छा नागरिक नहीं बनने दिया परन्तु शायद कुरान को तब और मुस्लिम धर्माचार्यों को अब इससे कोई मतलब नहीं रहा। इस प्रश्न को टाला नहीं जा सकता। कुरान जिस रूप में 'काफिर' और 'जिहाद' की व्याख्या प्रस्तुत करती है उसे सभ्य जगत स्वीकार करने में असमर्थता पाता है। **(शेष अगले अंक में)**

शेष पृष्ठ 7 का

समान नागरिक संहिता क्यों.......

परिस्थितियां खड़ी कर देती है, तभी तो उच्चतम न्यायालय समान नागरिक संहिता बनाने के लिए सरकार से बार–बार आग्रह कर रहा है।

राष्ट्र सर्वोपरि की मान्यता मानने वाले सभी यह चाहते है कि एक समान व्यवस्था से राष्ट्र स्वस्थ व समृद्ध होगा और भविष्य में अनेक संभावित समस्याओं से बचा जा सकेगा। यह भी कहना उचित ही होगा कि भविष्य में असंतुलित जनसंख्या अनुपात के संकट से भी बचने के कारण राष्ट्र का धर्मनिरपेक्ष स्वरुप व लोकतांत्रिक व्यवस्था भी सुरक्षित रहेगी और जिहादियों का बढ़ता दुःसाहस भी कम होगा।

अब सरकार का दायित्व है कि इसको लाने के लिए राजनैतिक इच्छाशक्ति के साथ संविधान की मूल आत्मा व सर्वोच्च न्यायालय के विभिन्न निर्णयों के आधार पर एक प्रारुप तैयार करके राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक परिचर्चा के माध्यम से इस कानून का निर्माण करवायें। निःसंदेह आज देश की एकता, अखंडता, सामाजिक व साम्प्रदायिक समरसता के लिए **समान नागरिक संहिता** को अपना कर विकास के रथ को गति देनी होगी।

शेष पृष्ठ 1 का

पिछले एक साल में........

जम्मू कश्मीर के राजौरी जिले में नियंत्रण रेखा पर पाकिस्तान के संघषर्विराम उल्लंघन के खिलाफ सेना मुंहतोड़ जवाब दे रही है। उन्होंने संवाददाताओं से कहा पाकिस्तान जो कुछ कर रहा है, वह हर कोई जानता है। उसका न सिर्फ अभी शत्रुतापूर्ण रूख है बल्कि वह पिछले ७० साल से ऐसा कर रहा है, लेकिन अब यह अंतर है कि जिस तरह की जवाबी कार्रवाई भारत की ओर से की जा रही है वैसी दशकों से नहीं दिखी है और सीमा पर रह रहे लोग इस बात के गवाह हैं। एक रक्षा प्रवक्ता ने कहा पाकिस्तानी सेना ने राजौरी सेक्टर में नियंत्रण रेखा के पास सुबह छह बजकर ४५ मिनट से एक बार फिर छोटे हथियारों, ८२ मिमी और १२० मिमी मोटार्रो से अंधाधुंध गोलाबरी शुरू की है। उन्होंने कहा भारतीय सेना की चौकियां प्रभावी और मजबूत ढंग से जवाब दे रही हैं, गोलीबारी जारी है। राजौरी जिले में नियंत्रण रेखा पर पिछले दो दिनों से गोलीबारी हो रही है। राजौरी के उपायुक्त शाहिद इकबाल चौधरी ने कहा कि राजौरी के चिटीबकरी इलाके में संघर्ष विराम के ताजा उल्लंघन की बात सामने आई है। उन्होंने कहा राजौरी के मंजाकोटे इलाके में भारी गोलीबारी शुरू हुई, सात से अधिक गांव प्रभावित हुए हैं। चौधरी ने कहा कि कई इमारतों को भारी नुकसान पहुंचा है। नौशेरा सेक्टर के ५१ स्कूलों को अनिश्चितकाल के लिए बंद किया गया है जबकि मंजाकोट और डूंगी क्षेत्रों के ३६ स्कूलों को तीन दिन के लिए बंद किया गया है, ८७ स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या ४६०० है। गोलीबारी की इन घटनाओं से २६६४ परिवारों के १००४२ लोग प्रभावित हुए हैं। इनमें तीन लोग मारे गए हैं, छह घायल हो गए और ६५ मवेशी मारे गए और खड़ी फसल को नुकसान पहुंचा है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र की राजग सरकार से मांग की है कि गुलाम कश्मीर को शीघ्र भारत में सम्मिलित किया जाये। क्योंकि जब तक पाक अधिकृत कश्मीर पर पाकिस्तान का कब्जा रहेगा, तब तक भारत में आंतकी धुसपैठ व आंतकवाद को रोका नहीं जा सकता है। गुलाम कश्मीर में पाकिस्तानी सेना आंतकियों को प्रशिक्षण देने का कार्य करता है।

दिनांक 07 जून से 13 जून 2017 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दिन
पूर्णिमा	09 जून	शुक्रवार
कबीरदास जंयती	09 जून	शुक्रवार
राम प्रसाद बिस्मिल जंयती	11 जून	रविवार
गणेश चतुर्थी	13 जून	मंगलवार

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

ईसाई पादरी का कुकृत्य

इटली की एक ईसाई संस्था से सम्बद्ध केरलस्थ प्रशिक्षण केन्द्र में प्रशिक्षणार्थी किशोर छात्र को धर्मशास्त्र पढ़ा रहे उसके शिक्षक के द्वारा प्रदत्त यौन–यातना का प्रकरण शिक्षक फादर जेम्स थेक्केमुरील की गिरफ्तारी से प्रकाश में आया है। कन्नूर में इरिट्टी के निकट स्थित 'देवा मठ ईसाई–संघ' में अधिष्ठाता फादर जेम्स थेक्केमुरील संस्था से सम्बद्ध प्रशिक्षण केन्द्र में धर्मविज्ञान पढ़ाते थे। चर्च के उच्चाधिकारियों से पादरी पद का प्रशिक्षण ले रहे इस किशोर की शिकायत पर वह पद से निलम्बित हुआ तथा पुलिस द्वारा उसे गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस इस पादरी के विरुद्ध अन्य शिकायतों का भी पता लगा रही है, जो संभवतः कन्नूर जिले के निवासियों द्वारा पुलिस में की गई हों। इस पादरी के दो अन्य भाइयों पर भी आरोप है कि उन्होंने पीड़ित किशोर को धमकी दी है कि यदि उसने चर्च के उच्चाधिकारियों से की गई शिकायत को वापस नहीं लिया, तो वे उसे जान से मार डालेंगे। पुलिस रिपोर्ट में बताया गया है कि पादरी थेक्केमुरील ने अप्रैल, २०१५ से ही किशोर से अप्राकृतिक व्यभिचार का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया था। उस समय तक वह अपनी उच्चतर माध्यमिक शिक्षा पूर्ण कर चुका था। एक रात यह पादरी जबरन उस किशोर छात्र के कमरे में घुस गया और उससे अप्राकृतिक दुराचार का बलपूर्वक प्रयास करने लगा। छात्र के विरोध करने पर पादरी ने उसे धमकाया तथा मानसिक यातना दी। जून, २०१५ में यह छात्र उच्च अध्ययन के लिए रांची स्थित प्रशिक्षण केन्द्र में गया। जब वह क्रिसमस की छुट्टियों में इरिट्टी आया तो पादरी ने वहाँ पुनः उस पर यौन अत्याचार किया। पीड़ित छात्र ने चर्च के उच्चाधिकारियों से शिकायत की। तब पादरी के विरुद्ध कार्यवाही करने का आदेश दिया गया। थेक्केमुरील को धर्मसंघ के अधिष्ठाता पादरी पद से हटा दिया गया। इसके बाद पादरी छात्र के घर पहुँचा और उससे चर्च के उच्चाधिकारियों को दी गई शिकायत वापस लेने को कहा। पीड़ित छात्र के अनुसार पादरी ने बंगलूर में भी उससे अप्राकृतिक व्यभिचार का बलात् प्रयास किया था, जिस पर उसने कोची स्थित साइरो–मलाबार चर्च के मुख्यालय में उच्चाधिकारियों से शिकायत भी की थी।

(इण्डियन एक्सप्रेस २७ अक्टूबर २०१६, से साभार)

ऊष्मारोधी होता है गोबर से बना वैदिक प्लास्टर

जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों के बीच ऐसे मकानों की प्रासंगिकता आज बढ़ रही है जो ऊष्मारोधी हों ताकि सर्दी और गर्मी दोनों से ही बचाव हो सके। पहले मिट्टी के बने और गोबर से लिपे कच्चे घरों में ऊष्मा को रोकने की क्षमता थी। उनमें सर्दी और गर्मी दोनों से बचाव होता था, लेकिन अब कच्चे मकान व्यावहारिक नहीं हैं। पक्के मकानों को ही इस तरह का बनाने के लिए ऐसा प्लास्टर तैयार किया गया है जो ऊष्मारोधी हो। यह वैदिक प्लास्टर प्रख्यात वैज्ञानिक डॉक्टर शिवदर्शन मलिक के दिमाग की देन है। जिनका कहना है कि वैदिक प्लास्टर ध्वनि एवं अग्निरोधक है तथा मकान को गर्मी में ठंडा तथा सर्दी में गर्म रखता है। इसके अलावा, इस प्लास्टर में गोबर का मिश्रण होने की वजह से यह प्राकृतिक वायु शोधक है और वातावरण को प्रदूषण मुक्त रखता है। यह अपने आप में पूर्ण है क्योंकि इसमें रेत मिलाने की जरूरत नहीं पड़ती और न ही तराई करने की जरूरत पड़ती है। देशी गाय के गोबर, जिप्सम, चूना और ग्वारगम पाउडर से निर्मित वैदिक प्लास्टर ध्वनि एवं अग्निरोधक है। यह साथ ही मकान को गर्मी में ठंडा और सर्दी में गर्म रखता है। डॉक्टर मलिक ने बताया, वैदिक प्लास्टर की व्यावसायिक बिक्री हमने पिछले साल नवम्बर में शुरू की थी। अभी तक हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में २५० टन वैदिक प्लास्टर की बिक्री हो चुकी है।

कबिरा खड़ा बजार में

गिरने में भी अव्वल आये केजरी

अरविंद केजरीवाल और उनकी पार्टी में इन दिनों जो कुछ चल रहा है, उससे राजनीतिज्ञों के प्रति अविश्वास और गहरा हुआ है। वे उम्मीदों को तोड़ने वाले राजनेता बनकर रह गए हैं। साफ–सुथरी राजनीति देने का वादा करके बनी आम आदमी पार्टी को सत्ता देने में दिल्ली की जनता ने जितनी तेजी दिखाई, उससे अधिक तेजी केजरीवाल और उनके दोस्तों ने जनता की उम्मीदें तोड़ने में दिखाई है। उतनी ही तेजी से आप के नेता जनता की नजरों से गिरें हैं। भारतीय राजनीति में अन्ना हजारे के चेलों ने जिस तेजी से भरोसा खोया, उस तेजी से तो जयप्रकाश नारायण और महात्मा गांधी के चेले भी नहीं गिरे। दिल्ली की सत्ता में आकर अपनी अहंकारजन्य प्रस्तुति और देहभाषा से पूरी आप मंडली ने अपनी आभा खो दी है। खीजे हुए, नाराज और हमेशा गुस्सा में रहने वाली यह पूरी टीम रचनात्मकता से खाली है। एक महान आंदोलन का सर्वनाश करने का श्रेय इन्हें दिया जा सकता है किंतु भरोसे को तोड़ने का पाप भी इन सबके नाम जरूर दर्ज किया जाएगा। जिस भारतीय संसदीय राजनीति के दुगुर्णो को कोसते हुए ये उसका विकल्प देने की बातें कर रहे थे, उन सारे दुगुर्णो से जिस तरह स्वयं ग्रस्त हुए वह देखने की बात है। राजनीति के बने–बनाए मानकों को छोड़कर नई राह बनाने कि हिम्मत तो इस समूह से गायब दिखती है। उसके अपनों ने जितनी जल्दी पार्टी से विदाई लेनी शुरू की तो लगा कि पार्टी अब बचेगी नहीं, किंतु सत्ता का मोह और प्रलोभन लोगों को जोड़े रखता है। सत्ता जितनी बची है, पार्टी भी उतनी ही बच तो जाए तो बड़ी बात है। एक नई पार्टी जिसने एक नई राजनीति और नई संभावनाओं का अहसास कराया था, उसने बहुत कम समय में खासा निराश किया है। आम आदमी पार्टी का संकट यह है कि वह अपने परिवार में पैदा हो रहे संकटों के लिए भी भाजपा को जिम्मेदार ठहरा रही है। जबकि भाजपा एक प्रतिद्वंद्वी दल है और उससे किसी राहत की उम्मीद आप को क्यों करनी चाहिए। ऐसा लगता है जैसे दिल्ली में पहली बार कोई सरकार बनी हो। सरकार बनाकर और अभूतपूर्व बहुमत लाकर निश्चित ही अरविंद केजरीवाल और उनकी टीम ने एक ऐतिहासिक काम किया था। किंतु सरकार भी ठीक से चलाकर भी दिखाते तो उससे वे इतिहास पुरूष बन सकते थे। आम आदमी पार्टी जो एक वैकल्पिक राजनीति का माडल बन सकती थी, आज निराश करती नजर आ रही है। यह निराशा उसके चाहने वालों में तो है ही, देश के बौद्धिक वर्गो में भी है। लोकतंत्र इन्हीं विविधताओं और सक्रिय हस्तक्षेपों से सार्थक व जीवंत होता है। आम आदमी पार्टी में वह ऊर्जा थी कि वह अपनी व्यापक प्रश्नाकुलता से देश की सत्ता के सामने असुविधाजनक सवाल उठा सके। उनकी युवा टीम प्रभावित करती है। उनकी काम करने की शैली, सोशल मीडिया से लेकर परंपरागत माध्यमों के इस्तेमाल में उनकी सिद्धता, भ्रष्टाचार के विरुद्ध रहने का आश्वासन लोगों में आप के प्रति मोह जगाता था। वह सपना बहुत कम समय में धराशायी होता दिख रहा है। सिर्फ एक आदमी की महत्वाकांक्षा, उसके अहंकार, टीम को लेकर न चल सकने की समस्या ने आम आदमी पार्टी को चौराहे पर ला खड़ा किया है। दल का अनुशासन तार–तार है। दल हो या परिवार समन्वय, संवाद से ही चलते हैं, अहंकार–संवादहीनता और दुर्व्यवहार से नहीं। केजरीवाल को यही लगता है कि उनकी सरकार, संगठन में सब जगह उन्हें नरेंद्र मोदी के लोगों ने घेर रखा है। राजनीति सच को स्वीकारने और सुधार करने से आगे ही बढ़ती है, पर क्या वे इसके लिए तैयार हैं।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 31 मई से 06 जून 2017 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।